अभिव्यक्त रेखाएं

EXPRESSIONS IN LINES

Booklet

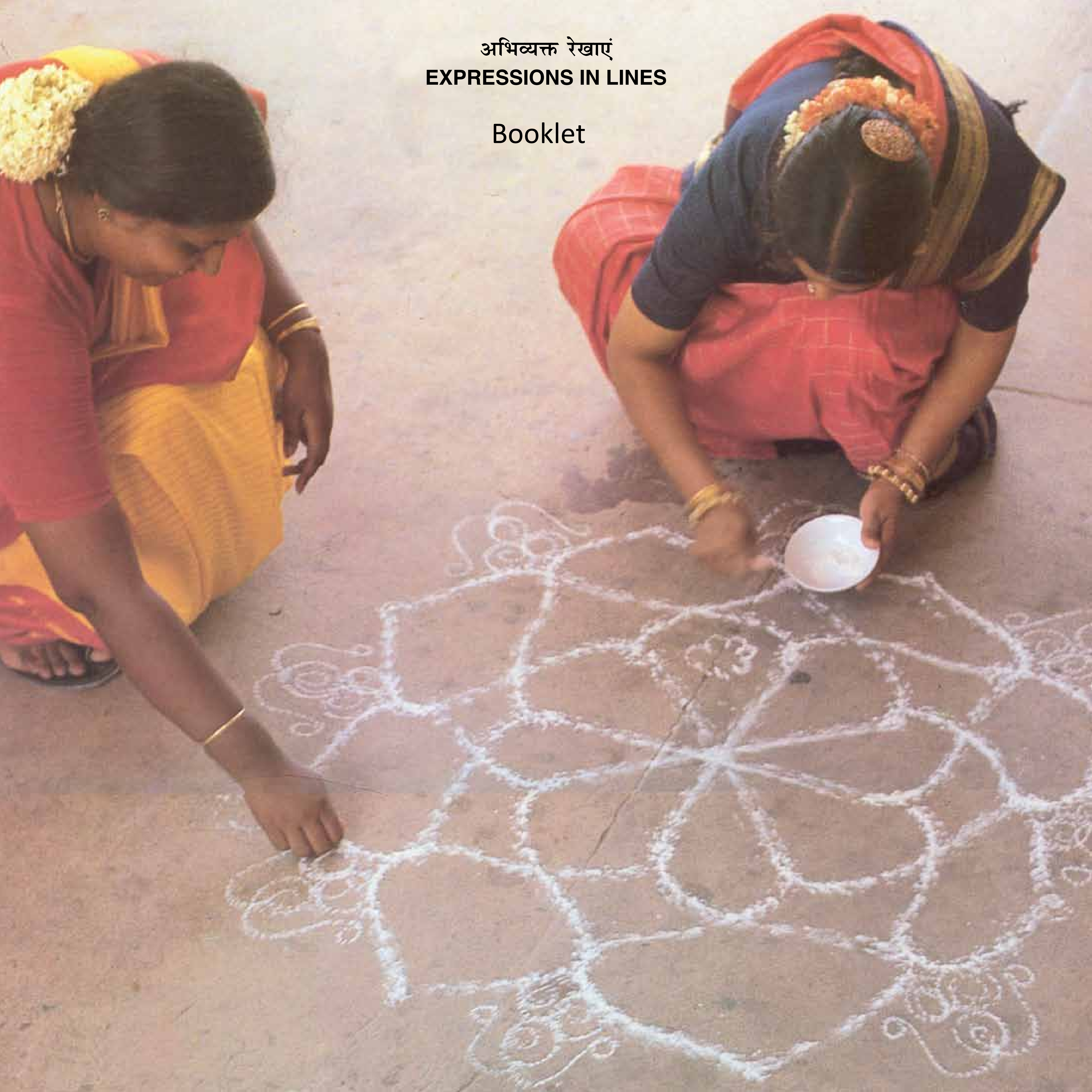

अभिव्यक्त रेखाएं

इस शैक्षणिक पैकेज में, केन्द्र रंगोली का एक लघु संग्रह प्रस्तुत कर रहा है। इसका उद्देश्य स्कूल के छात्रों और अध्यापकों की, रचनात्मक अभिव्यक्ति को दिनचर्या का एक हिस्सा बनाने और पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही अलंकृत रंगोली की बनावट का आनन्द परस्पर अनुभव करने हेतु प्रेरित करना है।

रंगोली बनाने के लिए विभिन्न विधियां प्रचलित हैं। आमतौर पर रंगोली खुले हाथ से बनाई जाती है, कलाकार जैसे-जैसे रंगोली बनाता जाता है, उसका सही आकार विकसित होता जाता है। इसलिए रंगोली केंद्र में एक बिंदु बनाकर शुरू की जाती है और फिर यह रंगोली ज्यामितीय आकारों के संकेंद्रित नमूनों जैसे वृत्त और वर्ग, त्रिकोण, सीधी और वक्र रेखाओं में विकसित होती है। यह चित्रांकन का एक स्वाभाविक तरीका है, जिसकी शुरूआत केंद्र से होती है, और एक ही नमूने को हर बार दोहराए जाने पर रंगोली विस्तारित होती जाती है।

केन्द्र, स्कूल के अध्यापकों और छात्रों को भारत की सांस्कृतिक विरासत के इतिहास की जानकारी प्रदान करने हेतु विविध प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। परंपरागत शिल्प शैलियों में क्रियात्मक कार्यशालाएं-प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण भाग हैं। रचनात्मक कार्य में सम्मिलित होने से, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने वाले अध्यापकों और छात्रों को, हमारी सांस्कृतिक परंपराओं के सूक्ष्म पहलुओं को समझने में और उनकी सराहना करने में सहायता मिलती है।

रंगोली और भित्ति अलंकरण में क्रियात्मक कक्षाएं हमारे प्रशिक्षण कार्यक्रमों का एक अनिवार्य हिस्सा बन गई है। यह सर्वविदित है कि रंगोली देश के सभी भागों में प्रचलित है। रंगोलियों में प्रयुक्त प्रतीक और नमूने, संबंधित प्रदेश की जानकारी प्रदान करते हैं। रंगोलियां विविध प्रकार की होती हैं और अपने स्वरूप तथा विषय वस्तु में भिन्नता लिए होती हैं, पर फिर भी कुछ अनिवार्य तत्वों के संदर्भ में, सभी प्रकार की रंगोलियां अपने मूल में एक समानता प्रदर्शित करती हैं। यह कला किसी विशिष्ट योग्यता प्राप्त कलाकार या विशेषज्ञ द्वारा बनाई गई नहीं है, वरन् यह सामान्य जन की एक सहज अभिव्यक्ति है और दैनिक जीवन का एक अनिवार्य भाग है।

भारत के विविध भागों में प्रचलित रंगोलियों का अध्ययन करने पर उनकी रचनात्मकता की प्रकृति और प्रवृत्ति को समझा जा सकता है। सुबह-सुबह, घर को साफ किया जाता है, घर के अंदर और आसपास की धूल और गंदगी को धो कर हटाया जाता है और जहां पर संभव हो, ज़मीन को ताज़ी मिट्टी से लीपा जाता है। प्रवेश द्वार पर एक रंगोली बनाई जाती है। इस प्रकार रंगोली बनाना प्रतिदिन के गृह कार्य का एक अनिवार्य हिस्सा है। ज़मीन और दीवारों पर अंकित परिकल्पनाएं (डिज़ाईन), घर की प्रसन्नता और कुशलता का संदेश व्यक्त करते हैं। रंगोली से की गई सजावट स्थाई रूप से नहीं होती, न ही इसको बनाने के पीछे डिज़ाईन (परिकल्पना) को सुरक्षित रखने का विचार होता है, वरन् इन्हें प्रतिदिन बनाया जाता है। इसलिए प्रत्येक अवसर, प्रत्येक मौसम और प्रत्येक त्यौहार के लिए रंगोली की विभिन्न परिकल्पनाएं होती हैं। रंगोलियों का अस्थाई पहलू, इस कला की एक विशिष्ट विशेषता है। रंगोली इस मान्यता का एक दृश्यात्मक चित्रांकन है कि मानव सदैव अपने संसार को अधिक सुंदर बनाने हेतु रचना करता है, प्रयास करता है।

EXPRESSIONS IN LINES

In this educational package, the Centre presents a small collection of floor designs. The purpose is to inspire school teachers and students to make creative expression a part of their daily life and to share the joy of decorative floor designs which have been passed on from generation to generation.

A variety of techniques are prevalent for making the designs. Generally, the designs are made freehand, where the artist evolves the form as the work is in progress. Hence, the design, beginning at the centre with a dot expands in concentric patterns of geometrical shapes of circles, squares, triangles, straight lines and curves. It is a natural way of drawing, beginning at the centre, growing larger with each repetition of a pattern.

The Centre organises a variety of training programmes for school teachers and students to provide them with knowledge of the history of India's cultural heritage. Practical workshops in traditional crafts form an important aspect of the training. Involvement in creative work further helps the participants in understanding and appreciating the finer aspects of our cultural traditions.

Practical classes in floor and wall designs is one activity that has become an essential part of our training programmes. It is widely known that floor designs are popular in all parts of the country. The symbols and patterns used in such designs provide knowledge of the region to which they belong. Floor designs are varied and diverse in form and content. Yet they display an underlying unity in some essential elements. This art is not created by a specialized artist or expert but is a spontaneous expression of the common people and an integral part of everyday life.

The ethos and spirit of creativity can be understood by studying floor designs of various parts of India. Early morning, the house is cleaned, the area in and around the house is washed of dust and dirt and, wherever possible, coated with fresh mudwash. A floor design is then made at the entrance. The making of the floor design is thus an essential part of everyday household routine. Designs on floors and walls convey the message of happiness and well being of the household. Floor decorations are not meant to be permanent; the idea is not to preserve the design; it is meant to be made every day and hence there are different designs for each occasion, each season and each festival. The non-permanent aspect of floor designs is a unique feature of this art, a visual portrayal of the belief that human beings will always create and make their world a more beautiful place.

रंगोली और भित्ति परिकल्पनाओं (डिज़ाइनों) को विविध प्रकार से बनाया जाता है। इसके बाद सूखे सफेद चॉक या चूना पाउडर अथवा दक्षिण भारत के समान चावल के आटे और चूने के पाऊडर के गीले मिश्रण से रंगोली बनाई जाती है। चूना, रोगाणुनाशी होता है और चींटियों तथा दीमक से बचाव करता है। चूने को उसकी इस उपयोगिता को देखते हुए सुंदर रेखाएं बनाने हेतु प्रयोग में लाया जाता है। साफ-सुथरी जमीन या दीवार पर सफेद रंग की चमक और शुद्धता भी संपूर्ण रंगोली की प्रतीकात्मकता का एक भाग है। चूंकि रंगोली बनाने में सभी प्राकृतिक तत्व प्रयुक्त किए जाते हैं। अत: ये रंग ज़मीन पर दाग-धब्बे नहीं लगने देते और इन्हें आसानी से मिटाया भी जा सकता है।

कुछ रंगोलियों को बनाने में गेरू और अन्य इसी प्रकार के रंगों, फूलों, पत्तियों और जलाए हुए भूसे का प्रयोग किया जाता है। फूलों का प्रयोग रंगोली को एक त्रि-आयामी स्वरूप प्रदान करता है।

प्रस्तुत पैकेज में, छात्रों और अध्यापकों को प्रत्येक प्रदेश की कुछ प्रतिनिधिक रंगोलियों से परिचित कराने हेतु परंपरागत रंगोलियों को प्रस्तुत किया गया है।

रंगोलियों का अपना एक सर्वतोमुखी आकर्षण है। विभिन्नता लिए हुए यह समृद्ध कला शैली सारी प्रादेशिक सीमाओं को पार कर स्वयं को संस्थापित किए हुए है। भारत के सभी राज्यों की सभी रंगोलियों को यहां प्रस्तुत करना संभव नहीं है। इस पैकेज में रंगोलियों का एक छोटा संग्रह प्रस्तुत किया जा रहा है, ताकि स्कूल के अध्यापक और छात्र रचनात्मक अभिव्यक्ति को अपने दैनिक जीवन का एक भाग बनाने हेतु प्रेरित हो सकें और पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही इस सस्ती, आलंकारिक कला शैली के आनन्द का परस्पर अनुभव कर सकें।

पंजाब और उत्तर प्रदेश का **चौक पूरना** और हिमाचल प्रदेश की **ऐपन** रंगोलियों में वर्ग, वृत्त तथा त्रिकोण को मूल नमूने के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। **चौक** (वर्ग) शब्द को **चौकी** (आसन) से ग्रहण किया गया है। जिसका तात्पर्य धन और समृद्धि की देवी 'लक्ष्मी' के आसन से है। मंगलकारी अथवा शुभसूचक रंगोली दो गुंथे हुए त्रिकोणों से युक्त भी होती है, जो विद्या की देवी सरस्वती की संकेतसूचक होती है। इसके आस-पास कमल की पंखुड़ियों तथा लक्ष्मी के पदचिन्ह भी बनाए जा सकते हैं। बच्चे के जन्म व विवाह के समय तथा भैया-दूज और रक्षाबंधन जैसे त्यौहारों के अवसर पर हिमाचल प्रदेश की कुमाऊंनी महिलाओं द्वारा जटिल परिकल्पनाओं (डिज़ाईन) वाले चौक बनाए जाते हैं।

सरस्वती की **चौकी** को विस्तार और विकास के सूचक संकेंद्रित वृत्तों से सजाया जाता है। गुंथे हुए त्रिकोणों व आठ पंखुड़ियों वाले कमल के फूल या आठ कोणों वाले तारों से इस रंगोली को विस्तार दिया जाता है। **चौकी** में अलंकृत प्रभाव उत्पन्न करने के लिए चार कोनों में स्वास्तिक चिन्ह तथा त्रिकोणों के आस-पास मेहराब भी बनाए जाते हैं।

पीठा शिवजी का आसन है और इस रंगोली में संकेंद्रित वर्ग अथवा वृत्त बने होते हैं। इनमें भगवान की वेदी का वर्ग सबसे बड़ा वर्ग होता है। हिमाचल प्रदेश की **लिखनूं** और **ऐपन** रंगोलियां भी होती हैं और इनमें गर्व व हर्ष के प्रतीक सूर्य, फूलों, वृक्षों, मानव आकृतियों, मोर तथा डोली आदि के चित्रात्मक नमूनों को भी प्रदर्शित किया जाता है जो बाहरी वातावरण के साथ मानव के निकट सम्पर्क का ही स्वाभाविक परिणाम है।

हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी इलाके चित्रांकन-कला के खजाने हैं। गांवों तथा छोटे शहरों में हमें जमीन तथा दीवारों पर बनाए जाने वाले चित्रों के रूप में चित्रलेख प्राप्त होते हैं। इस पहाड़ी इलाके के लोग बहुत ही विशिष्ट रंगोलियां बनाते हैं। जैसे-विवाह तथा अन्य मांगलिक अवसरों के लिए **खोबर,** देवी तथा देवताओं की प्रतिकृति के आकार में धार्मिक **बंगाड़वाड़ी** नमूने, नव-दम्पत्ति को आर्शीवाद देने के लिए विवाह के अवसर पर बनाए जाने वाले **कानदेव** (इसे नाई समुदाय के द्वारा बनाया जाता है), नवग्रहों को संतुष्ट करने के लिए **चौक** (इसे पुरोहित बनाते हैं), गोबर से लीपे हुए कच्चे घरों पर प्रचुर मात्रा में बनाए जाने वाले **हंगैन** और **चौक** से मिलते-जुलते **ढेरा** के नमूने। इन रंगोलियों में चावल का आटा, गेहूं का आटा, मिट्टी और सब्जी के रंगों का प्रयोग किया जाता है। नमूने बनाने के लिए अंगुली के कोनों तथा हथेली का प्रयोग किया जाता है। रंगोली की बाहरी रेखाओं को कपड़े के टुकड़े या कपास की डंडी या फिर टहनी के कोनों से बांध कर बनाया जाता है।

The design is made with dry white chalk or lime powder or with a net mixture of rice powder and lime as in south India. Lime acts as a disinfectant and keeps ants and termites away. It is used both for its utility and for creating beautiful lines. The brightness and purity of the white colour on a clean ground or wall are also part of the symbolism of the entire design. Since all the components are of natural material, the colours do not stain the floor and can be easily erased.

There are designs which make use of colours like *geru* and others where flowers, petals and burnt husk are used. The use of flowers gives the design a three dimensional form.

In this package, traditional designs have been presented in order to familiarise students and teachers with some representative designs of each region.

Floor designs have an universal appeal. This rich yet diverse art form cuts across regional boundaries.It is not possible to reproduce all the designs from all the states of India. A small collection has been made to inspire school teachers and students to make creative expression a part of their daily life and to share the joy of this inexpensive, yet decorative art form, which has been passed on from generation to generation.

The *chowkpurna* of Punjab and Uttar Pradesh and the aipan designs of Himachal Pradesh adopt squares, circles and triangles as the basic motif. The word *chowk* (square), is derived from the word *chowki* (seat) of Lakshmi (goddess of wealth and prosperity). The auspicious designs also consist of two interlaced triangles, signifying Saraswati, the goddess of learning. This may be encircled by lotus petals and Lakshmi's footprints. Intricate chowks designed by Kumaon women are often drawn on occasions like the birth of a child, and marriages and festivals like Bhai Duj and Rakshabandhan.

The chowki for Saraswati is more elaborate with concentric circles to signify growth and expansion, interlaced triangles and eight petalled lotus flowers or eight-pointed stars. Swastik in the four corners and arches around the triangles are added for a decorative effect.

The *pitha* is a seat of Shiva and consists of concentric squares or circles,the largest square being the altar of the god. There are also the *likhnoo* and *aipan* floor designs of Himachal Pradesh and pictographic motifs symbolising joy and pride like the sun, flowers, trees, human figures, peacocks, palanquins, etc, all a spontaneous result of man's close association with his immediate surroundings.

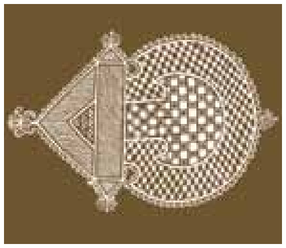

The hilly tracts of Himachal Pradesh are a treasury of pictorial art. In the villages and small towns, pictographs in the form of floor and wall drawings have survived. The people of this hill area make remarkable compositions like Khobars for weddings and other auspicious occasions, ritual *bangadwari* motifs in the shape of portraits of gods and goddesses; *kandeos* (made by *nains* of the barber community) for marriage ceremonies to bless the bridal pair; *chowks* to propitiate *navagarahas* (made by *purohits*); profusely designed *hangains* made on *kuchha* houses plastered with cowdung and *dhera* designs resembling the *chowks*. Rice paste, wheat flour, soil and vegetable dyes are used for colours. Finger tips and the palm are brought into play to develop the patterns. The outlines are carefully drawn with thin *twigs* or sticks wound with a rag or cotton wool.

राजस्थान और मध्य प्रदेश में बनाई जाने वाली रंगोली को **मांडना** कहते हैं। इसका शाब्दिक अर्थ है–मांडन अर्थात सजावट। इसमें वर्ग, षटकोण, त्रिकोण और वृत्त के विविध नमूने बनाए जाते हैं। मांडना बनाने के लिए जमीन को गोबर से लीप कर साफ किया जाता है और कुछ अवसरों पर जमीन पर गहरा लाल रंग (लोहित वर्ण) किया जाता है। यह रंग रति को मिलाने से बनता है। (रति राजस्थान की लाल मिट्टी को कहते हैं।) मध्य प्रदेश के मांडनों में अवसर के अनुकूल विविध प्रकार के आकारों और बनावटों का प्रयोग किया जाता है। पूर्णिमा की रात को समृद्धि के प्रतीक-स्वरूप अनेक प्रकार के फलों तथा पत्तियों की आकृतियों–सफेद तथा गेरू रंग की पंक्तियों की सहायता से रंगोली के रूप में बनाई जाती हैं। होली के समय ढोल के त्रिकोणात्मक रंगोली के नमूने (देवी को समर्पित) में बिंदु तथा रेखाएं बनाई जाती हैं। इस प्रदेश में रंगोली बनाने के लिए चॉक पाउडर के घोल को पानी में मिलाकर प्रयोग में लाया जाता है। **पगल्या** के बिना मांडना अधूरा माना जाता है। पगल्या-देवी तथा देवताओं के पदचिन्ह होते हैं। दक्षिण भारत में कृष्ण जयंती और श्री जयंती जैसे अवसरों पर बनाई जाने वाली रंगोलियों में भी कृष्ण के पदचिन्हों को बनाकर घर को सजाया जाता है।

गुजरात में दिवाली आदि त्यौहारों के अवसर पर घरों के प्रवेश द्वार को **संथिया** रंगोली से सजाया जाता है। महाराष्ट्र की **रंगोली** में **कमल, स्वास्तिक** जैसे सुरुचिपूर्ण आकार तथा नमूने प्रयुक्त किए जाते हैं। अन्य स्थानीय परिकल्पनाएं जैसे–आठ पंखुड़ियों वाला शंख-कमल तथा आठ पंखुड़ियों वाले कमल के आकार की **झेला** रंगोली भी लोकप्रिय है। कमल की तरह स्वास्तिक प्रतीक हमें और भी कई रंगोलियों में प्राप्त होता है।

दक्षिण भारत की **कोलम** नामक रंगोली को कल्पनानुसार बनाया जाता है। इसमें विविध संख्याओं, रूपों और संयोजनों के बिंदुओं के समूह को परस्पर जोड़ा जाता है। गीली जमीन पर चावल के आटे या पिसे हुए पत्थर के सफेद पाउडर (कलमाव) से निपुणतापूर्वक पतली रेखाएं खींची जाती हैं। चावल के आटे को सूखी सतह और विशेष अवसरों पर प्रयोग में लाया जाता है। परम्परागत **कोलम** के किनारों को लाल गेरू से बनाया जाता है। गीले मिश्रण को प्रयोग करते समय सीधे हाथ की बीच की उंगली से या फिर मिश्रण में अवशोषक रुई या कपड़े के छोटे टुकड़े को भिगोकर रेखाएं बनाई जाती हैं।

रंगोली बनाते समय भारतीय राशि के चिन्हों विशेषकर सूर्य और चंद्रमा का भी चित्रांकन किया जाता है। **तुलसी पूजा** के लिए पारम्परिक तुलसी का चबूतरा चित्रित किया जा सकता है और कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर घर की दहलीज के दाहिनी तरफ से पूजा-गृह तक बालक के साथ झूला और कृष्ण के पदचिन्ह रंगोली के रूप में बनाए जा सकते हैं। दक्षिण भारत में फसल काटने के पोंगल उत्सव के दौरान समानांतर रेखाओं से युक्त कोलम रंगोली बनाई जाती है। इसमें घड़े की बनावट, पके ताजे अनाज को पकाने का प्रतीक स्वरूप होती है। इसे ग्रामीण क्षेत्रों में बनाया जाता है। विशेष रूप से बड़ी रंगोलियां केवल विवाह-समारोहों पर ही बनाई जाती हैं। इन्हें **मंडप कोलम** के नाम से जाना जाता है। गीले चावल के आटे से बनी कोलम **रंगोली विवाह** स्थल को एक आनुष्ठानिक लालित्य और पवित्रता का वातावरण प्रदान करती है। सप्ताह के प्रत्येक दिन की सुबह, हर घर के प्रार्थनागृह में **गृह कोलम** बनाए जाते हैं। सप्ताह के प्रत्येक दिन के लिए विशेष **कोलम** होता है। जैसे सोमवार के लिए तारा, शुक्रवार के लिए हृदयकमलम्, रविवार के लिए त्रिभुजाकार जाली की बनावटें और अन्य दिनों के लिए अन्य बनावटें बनाई जाती हैं।

केरल में घरों तथा मंदिरों को विशेष रूप से **ओणम** त्यौहार के दौरान **अनियाल** रंगोली से सजाया जाता है। प्रवेश द्वार पर **पूवू कोलम** रंगोली को बनाया जाता है तथा प्रवेश द्वार के आस-पास की जगह को सजाने के लिए फूल-सज्जा, नारियल के रेशों तथा रंगीन पाउडर का प्रयोग किया जाता है।

आंध्र प्रदेश की परम्परागत रंगोली को **मुग्गलू** के नाम से जाना जाता है। सप्ताह के प्रत्येक दिन के लिए निर्धारित एक स्थायी प्रतीक चिन्ह के आस-पास रंगोली बनाई जाती है। घरों में पूजा-गृहों को सजाने के लिए सोमवार को **शिवपीठ**, मंगलवार को **कालीपीठ**, बुधवार को **स्वास्तिक**, शुक्रवार को **लक्ष्मी** को रंगोली के रूप में बनाया जाता है। इस प्रकार की रंगोली में मुख्य रूप से प्रचलित कमल का फूल, स्वास्तिक, शंख सीपी और चक्र के नमूने बनाए जाते हैं। इस प्रकार की रंगोलियों में **'श्री'** का प्रतीक चिन्ह आमतौर पर देखने को मिलता है। **'श्री'** को लक्ष्मी के अर्थ-रूप में भी लिया जाता है। इसे

The *mandana* of Rajasthan and Madhya Pradesh, literally means *mandan* (decoration). The patterns again vary from squares, hexagons, triangles and circles. For preparing a mandana the ground is cleaned with cowdung and on several occasions finished with crimson red which is obtained by mixing *rati* (red earth found locally in Rajasthan). The *mandanas* of Madhya Pradesh use a variety of shapes and designs, in accordance with the spirit of the occasion. On a new moon night these floor designs take the form of several stylised fruits and leaves, in ochre and white lines to symbolise prosperity. During Holi, triangular patterns of the drum (sacred of the deity) have dots and lines. Floor designs in this region are drawn with a solution of chalk, obtained by dissolving it in water. A *mandana* without a *pagalya* is said to be incomplete. *Pagalyas* are the footprints of gods and gooddesses. Designs made on Krishna Jayanti and Srijayanti in south India also have Krishna's footprints decorating the homes.

In Gujarat, floor designs known as santhias decorate the entrances to houses on festivals like Diwali. Rangoli of Maharashtra uses elegant shapes and motifs like the lotus, Swastik, etc. Other local designs like *Shankh Kamal* with eight petals, *jhela* which has the shape of an eight-petalled lotus are also common. The Swastik symbol like the lotus, appears in a variety of *rangoli* designs.

The *kolam* designs of south India are imaginatively drawn to link an array of dots which vary in number, combination and form. The thin lines are deftly done with powdered rice or the white powder of crushed stone *(kalmav)* on a wet ground. Rice paste is used on dry sufaces and on special occasions. Traditional *kolam* designs are outlined with red *geru*. While using wet paste the lines are drawn with the middle finger of the right hand or by dipping a small piece of absorbant cotton or rag into the paste.

All the Indian zodiacal signs are drawn, especially the Sun and the Moon. For Tulsi *puja*, the conventional Tulsi platform may be drawn and on Krishna's birthday, a cradle with the baby and footprints of Krishna are made right from the doorstep to the *puja* area. During the harvest festival of Pongal the convention of drawing symmetrical line *kolams* is followed. Pot designs symbolising the cooking of freshly harvested grain is made in the rural areas. Prominently large floor designs are drawn exclusively for marriage ceremonies known as *mandapa kolams*. Made with wet rice paste these *kolams* add an aura of sanctity and ceremonial elegance to the marriage hall. The *puja* sanctorums in conventional homes are sanctified every morning with a *graha kolam*, to suit the day of the week, like the star for Monday, Hridayakamalam for Friday, a triangular grill pattern for Sunday, etc.

Kerala homes and temples are profusely decorated with *anlyals*, particularly during Onam festival. Floor designs called *puvu kolam* are made at the entrance with a central flower bed, coconut bushes and coloured powder to decorate the edges.

Floor designs in Andhra Pradesh are known as *muggulu*. Each day of the week has a set symbol and the design is developed around it. Shivpith for Monday, Kallpith for Tuesday; Swastik for Wednesday, Lakshmi for Friday, etc. decorate the *puja* area in homes. The basic motifs are the usual lotus, Swastik conch shells and discs. In these designs, the symbol of Shri is frequently seen. Shri being Lakshmi, is also represented in the centre of a

ज्यामितीय नमूनों के साथ गूढ़ जाल के केंद्र में भी बनाया जाता है। एक साधारण रंगोली की परिकल्पना में एक ओर लम्बवत् रेखाओं के साथ दो सीपी शंख बने होते हैं। इस प्रकार की रंगोली में कमल को कई बार बनाया जाता है और हर बार उसकी पंखुड़ियों की संख्या और रूप भिन्न होता है। इस रंगोली में आठ पंखुड़ियों वाले कमल के फूल (अष्टदल) से घिरे हुए त्रिकोणाकार जाल की बनावट प्रचलित है।

ओड़िशा की **झूंटी** और बंगाल तथा असम की **अरीपना** रंगोलियों में हमें सौंदर्यपरक बनावट तथा लहराते ज्यामितीय स्वरूप और फूल वाली रेखाओं की बनावट प्राप्त होती है। इन रंगोलियों में आमतौर पर शंख सीपी, मछली का नमूना, सर्प, फूल आदि का प्रयोग किया जाता है। रंगोली को चॉक पाउडर से जमीन पर बनाया जाता है और फिर इसमें रंगीन पाउडर या रंगे हुए चावल के आटे से रंग भरा जाता है। लाल रंग के लिए आलता, पीले रंग के लिए हल्दी और नीले रंग के लिए स्याही का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए मसूर या गेंहूं, साबूदाना या चावल का भी प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक **अल्पना** रंगोली के आगे फूल रखने का रिवाज़ है।

अल्पना को जमीन या फिर निचले चबूतरे पर बनाया जाता है, जो तत्पश्चात **पीठा** या देवी लक्ष्मी का आसन बन जाता है। इस पवित्र स्थान में किनारी पर बनाई जाने वाली रंगोली में ज्यामितीय आकारों अथवा पंक्तियों में कमल के फूल के नमूने बनाए जाते हैं। तथा इसमें प्रयुक्त होने वाले पत्तों और फूलों की संख्या का अपना एक मांगलिक महत्त्व होता है। **मांडना** के अंदर, केंद्र-बिंदु में सिंदूर का एक बिंदु और त्रिकोण बनाया जाता है, जो देवी का प्रतीक रूप होता है। सूर्य और चंद्रमा, नवग्रह, बांस और कमल के जंगल, मछली, बिच्छू और सांप के नमूनों को भी कलात्मक नमूनों के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

इस पैकेज में जो रंगोलियां प्रस्तुत की गई हैं उनमें आपको प्रकृति अपने सभी रूपों में प्रमुख रूप से अभिव्यक्त होती प्रतीत होगी। जिन रंगोलियों को विशेष धार्मिक अथवा सामाजिक उत्सवों हेतु बनाया जाता है उनमें भी सूर्य, चंद्रमा, पक्षी, फूल और वृक्ष को नमूने के रूप में रूढ़ शैली में अंकित किया जाता है। भारतीय जनमानस प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए रहता है, और इस प्रकार उनकी रचनात्मक अभिव्यक्तियां उनके अपने आसपास के वातावरण से प्रभावित होती हैं। अतः जमीन को अलंकृत करने अर्थात् रंगोली बनाने और भित्ति अलंकरण की यह कला, भारतीय मानस की, कलात्मक अभिव्यक्ति के प्रति स्वाभाविक ललक को उद्घाटित करती है।

mystic grill designed with geometrical patterns. A simple design has two conch shells with vertical lines on either side. The lotus appears often and each time the petals vary in number and form. A triangular grill formation, surrounded by eight petalled lotus flowers *(ashtadal)* are common.

The *Jhonti* of Odisha and the *aripana* designs of Bengal and Assam are highly stylised with aesthetic patterns and motifs in flowing geometrical and floral lines. Conch shells, fish motifs, serpents, flowers, etc. are commonly used. The designs are drawn on the floor with chalk powder and filled with coloured powder or rice paste coloured with *alta* for red, turmeric for yellow and ink for blue. Bengal gram or wheat, sago or rice are also used. It is customary to place a flower before each *alpana* design.

The *alpana* is drawn on the ground or on a low platform which then becomes the *pitha* or seat of goddess Lakshmi. The border designs that enclose the sacred space is either geometrical in shape or made of leaves and lotus flowers. The number of leaves and flowers have an auspicious significance. Within the *mandala*, at the centre point, is placed the vermillion *bindu*, and the triangle symbolising the goddess. Motifs of the Sun and the Moon, the *navagrahas*, forests of bamboos and lotus, the fish, the scorpion and the snake, are also arranged in artistically composed patterns.

In the floor designs that are given in this package, you will notice that nature in all its manifestations figures prominently. Even in those designs that are made for specific religious or social ceremonies, stylised depictions of the Sun, the Moon, birds, flowers and trees form part of the design. The Indian lives in harmony with nature. All his creative expressions are directly influenced by his immediate environment. The decorative art of floor and wall designs express this innate urge for artistic expression characteristic to the Indian psyche.

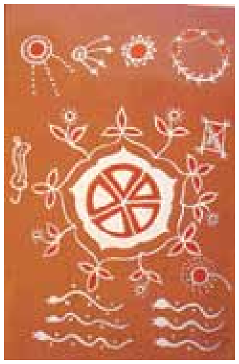

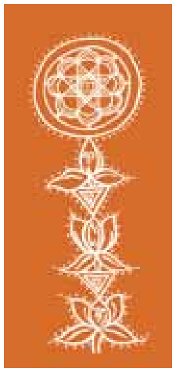

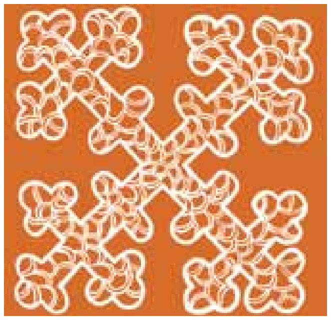

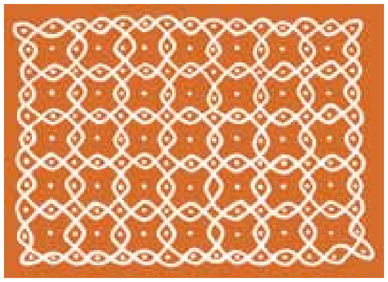

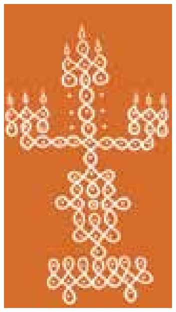

परम्परागत सजावटी रंगोलियाँ, जो पीढ़ियों से चली आ रही हैं, और आज भी प्रचलित हैं, वह स्कूल के छात्रों को अध्ययन के लिए रुचिकर सामग्री प्रदान कर सकती हैं। वह एक पृथक सौंदर्यात्मक उल्लास प्रदान करती हैं। रंगोली की बनावटों से सम्बन्धित प्रतीक-चिन्हों और रूपों तथा रेखाओं के उपयोग के लिए रंगोली की बनावटों का अध्ययन एक जानकारी का सृजन करता है।

अन्य सभी रचनात्मक अभिव्यक्तियों की तरह प्रकृति भी अनेक बनावटों के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो प्रतीक-चिन्हों और सुरुचिपूर्ण रूपों में पाई जाती है। युवा छात्र प्रकृति के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं और उनमें से बहुत से छात्रों ने भिन्न-भिन्न अवसरों पर अपने घर की जमीन पर बनी विभिन्न प्रकार की रंगोलियां को देखा होगा। यह आशा की जाती है कि इस संग्रह में दिए गए कुछ उदाहरण, देश के सभी भागों की रंगोलियों के विविध रूपों के प्रति छात्रों में एक चेतना का सृजन करेंगे और उन्हें परम्परागत रंगोलियों के साथ सामंजस्य बिठाने वाली रंगोली के नए रूपों की रचना के लिए प्रेरित करेंगे।

शैक्षणिक संग्रह से सम्बंधित निम्न गतिविधियां छात्रों के लिए सुझाई गई हैं:–

1. रचनात्मक रंगोलियों में सम्मिलित हस्त-कौशल और तकनीकी को सीखनें के लिए छात्र स्कूल में ही कोशिश कर सकते हैं। इसके लिए स्कूल में जमीन के एक हिस्से को साफ कर सकते हैं और यदि सम्भव हो तो उस हिस्से को गोबर और मिट्टी से लीप सकते हैं। प्रत्येक छात्र को प्रकृति के किसी भी पहलू को स्वच्छंद रूप से अभिव्यक्त करने की अनुमति दी जा सकती है। इस प्रयोग से छात्र रेखाओं, वक्रों, प्रकृति से सम्बंधित ज्यामितीय नमूनों जैसे पत्तियों, पंखुड़ियों, इंद्रधनुष, चंद्रमा और सितारों आदि की आकृति को समझ सकते हैं।

2. छात्रों को रंगोली के नमूनों विशेषकर अपने प्रदेश की रंगोली-बनावटों को एकत्रित करने के लिए इनमें निहित सौंदर्य तथा रूपों का एक अध्ययन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। वे इस संग्रह और रंगोलियों से एक स्रोत-पुस्तक का निर्माण भी कर सकते हैं, जिसमें भारत के सभी भागों की रंगोलियों की बनावटों और संग्रह को शामिल किया जा सकता है। यह पुस्तक विभिन्न प्रदेशों के तुलनात्मक अध्ययन में उनकी सहायता करेगी। छात्र धार्मिक व सामाजिक उत्सवों जैसे होली, दिवाली, जन्म तथा विवाह आदि के लिए रंगोली की बनावटों के अर्थ की व्याख्या करने के लिए एक चार्ट (सारणी) बना सकते हैं।

3. छात्र समूहों में विभक्त हो सकते हैं। वह रंगोली में प्रयोग की जाने वाली सामग्री का अध्ययन कर सकते हैं। विशेषकर अपने प्रदेश के संदर्भ में वह रंगोली पर उपलब्ध स्थानीय सामग्री और वातावरण के प्रभाव को प्रकाश में ला सकते हैं।

(i) एक रुचिकर प्रक्रिया का भी आयोजन किया जा सकता है। इसके लिए एक कक्षा में विभिन्न सामग्री-साधारण और असाधारण, दोनों ही को वितरित किया जा सकता है। जैसे:

The traditional decorative floor designs which have been passed down through the ages are prevalent even today and can provide interesting material for study for school students. Apart from the aesthetic joy they provide, the study of floor designs also creates an awareness of the use of lines, forms and symbols connected with floor designs.

Like in all other creative expressions, nature has been the source of inspiration for many of the designs whether in symbolic or stylised form. Young students are very sensitive to nature and most of them have seen a variety of designs being made in their houses on the floor, on different occasions. It is hoped that the few examples given in the package will create an awareness among students of the variety of designs in all parts of the country and inspire them to create new forms in consonance with the traditional designs.

The following activities related to the educational package are suggested for students:-

1. For learning the techniques and skills involved in creative designs, students can clean an area in the school and if possible apply cowdung and mud. Each student can be allowed to make freehand representation on any aspect of nature. From this exercise the students can understand lines, curves, geometrical patterns linked with nature such as shapes of leaves, petals, the rainbow, moon, stars, etc.

2. The students can be encouraged to collect floor patterns specific to their region and make a study of the variety and beauty inherent in them. They can also make a source book in which collections and designs from every part of India can be included. This will help them to make comparative studies of different regions. They can make a chart explaining the significance of designs for religions and social ceremonies such as Holi, Diwali, births and marriages.

3. Students can be divided into groups. A study of the material used in floor designs with particular reference to their own region can be made highlighting the effect of environment and locally available material on designs.

(i) An interesting activity can be organised. Different material both common and uncommon may be supplied to a class. e.g:-

साधारण सामग्री	असाधारण सामग्री
सफेद पाउडर	बुरादा
चावल का घोल	कांच
गेरु	कागज की कतरन (चमकीला)
रंगीन फूल	विभिन्न रंगों के पत्थर
	रेत/मिट्टी/आदि

प्रत्येक छात्र को निश्चित आकार का एक गत्ता दिया जा सकता है। किन्हीं तीन सामग्रियों का चयन करके छात्र को एक रंगोली बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इसके लिए कुछ संकेत दिए जा सकते हैं। जैसे पृष्ठभूमि एक रंग की हो सकती है, रेखाचित्र किसी दूसरे से बनाया जा सकता है, जबकि कुछ महत्वपूर्ण रेखाएं तीसरे रंग से बनाई जा सकती हैं।

(ii) छात्र एक एकाकी नमूने की रचना कर सकता है और प्रभावशाली रूप से दोहराए गए नमूनों को सजा सकता है। (चित्र देखें)

(iii) रेखाएं विभिन्न प्रकार की हो सकती हैं। (चित्र देखें)

इस प्रकार की कक्षा महीने या पंद्रह दिन में एक बार लगाई जा सकती है। बच्चे को प्रत्येक समय के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की सामग्री के उपयोगों के लिए कहा जा सकता है। यह प्रयोग बच्चों की रचनात्मक शक्ति को बढ़ाने के लिए एक अवसर प्रदान करेगा।

4. छात्रों को नमूनों को एकत्रित करने के लिए कहा जा सकता हैं–विशेषकर उनके प्रदेश के फूलों, वृक्षों, फलों, जानवरों, पक्षियों, घरों आदि को दर्शाने वाले नमूने, जो उस प्रदेश के धार्मिक व परम्परागत प्रतीक-चिन्ह हैं। उन्हें इन नमूनों को दोबारा बनाने तथा उनसे सम्बंधित धार्मिक-कथा की व्याख्या करने के लिए एक अनुच्छेद लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। उदाहरणार्थ कमल, परोपकार व शुद्धता का प्रतीक है और वह देवी लक्ष्मी से भी सम्बद्ध है। वृक्ष, जीवन और विकास का प्रतीक है, जबकि मछली, उर्वरता और समृद्धि का प्रतीक है। कुछ रंगोलियां भित्ति-चित्र होती हैं और निश्चित विषय-वस्तु अर्थात् संकेतों को प्रसारित करती हैं।

Common Material	Uncommon Material
White Powder	Saw Dust
rice paste	Mirrors
'geru'	Cut paper (glazed)
Coloured flowers	Lentils
	Stones of different colours
	sand, mud, etc.

Each child can be given a cardboard of a standard size. Choosing any three materials the child may be encouraged to create a design. Some hints may be given, e.g backgrounds can be in one material, sketches in another, while a few highlights can be in the third medium.
A few prepared samples will help.

(ii) Children can create a single motif and arrange repeated motifs effectively. (see drawing).

(iii) Lines can be of different types. (see drawing)

A class like this can be held once in a fortnight. The student must be asked to use different material each time. This will give a chance for the student's creativity to flower.

4. Students can be asked to collect motifs specific to their region depicting flowers, trees, fruits, animals, birds, houses etc. which have ritualistic or traditional significance. They may be encouraged to reproduce these motifs and write a paragraph explaining the story of the ritual related to it. For example, the lotus is the symbol of purity and goodness and is also associated with the goddess Lakshmi. The tree is a symbol of life and growth, while the fish signifies fertility and prosperity. Some floor designs are pictographic and convey certain themes.

(ii)

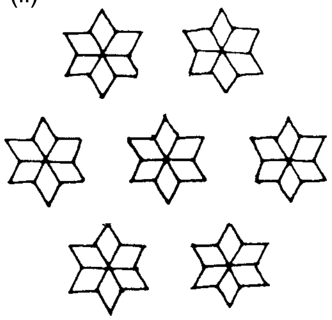

(iii)

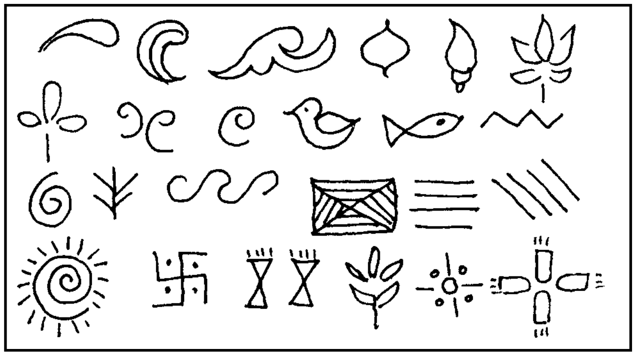

(i) बच्चों में रेखित कागज़ (ग्राफ पेपर) वितरित किया जा सकता है। वर्गों के प्रयोग में उनका मार्गदर्शन किया जा सकता है। बच्चों को एक कहानी का वर्णन करने वाले रेखाचित्रों की श्रृंखला की रचना करने के लिए कहा जा सकता है। वह कहानी प्रकृति, संरक्षण या अमूर्त भाववाचक विषयों जैसे 'खुशी', 'कार्य' आदि पर आधारित होनी चाहिए। कहानी लिखी भी जा सकती है। इस उपक्रम में बच्चे राजस्थान आदि प्रदेशों से लिए गए कथा-विषयों सहित रेखाचित्र दर्शा सकते हैं।

(ii) बच्चों को एक ऐसे विचार, जिसे वह अपनी योजना में शामिल करना चाहते हैं, को अभिव्यक्त करने वाले प्रतीक-चिन्हों को बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, उदाहरणार्थ–

(अ) एक शंख का अर्थ हो सकता है
– प्रकृति का रहस्य
– प्राकृतिक दुनिया का भ्रमण
– समुद्र की देखरेख

(ब) एक पत्ती का अर्थ हो सकता है:
– पुनरुद्धार
– ताजगी
– नवजीवन

इसी प्रकार बच्चों को निश्चित विचारों का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीक-चिन्ह बनाने के लिए कहा जा सकता है। सजावटी चार्ट ब्लैक बोर्ड (श्यामपट्ट), लेखन-सामग्री आदि का ज्यादा उपयुक्त प्रयोग किया जा सकता है।

5. छात्रों को संयुक्त बिंदुओं, सीधी रेखाओं, वक्रों या निश्चित बनावटों के रूपों जैसे पंखुड़ी या घरों, मानवाकृतियों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं के ज्यादा पेचीदा नमूनों के द्वारा स्वयं निर्मित नमूने बनाने के लिए कहा जा सकता है।

6. रंगोलियों की नई बनावटें स्कूल में भिन्न-भिन्न अवसरों पर बनाई जा सकती हैं और छात्रों को नई तकनीक सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। वे आसानी से उपलब्ध सामग्री जैसे फूलों, पंखुड़ियों, घास, मसूर और अनाज आदि के उपयोग से त्रिआयामी रूपों को भी बना सकते हैं।

त्यौहार या महत्वपूर्ण स्कूल-दिवस पर एक रंगोली-प्रतियोगिता आयोजित की जा सकती है। इसके लिए 5-6 छात्रों के समूह को बरामदे, बगीचे, आंगन आदि में सीमित क्षेत्र (20' × 20') दिया जा सकता है। 'पर्यावरण दिवस' या 'दिवाली' जैसी एक विषय-वस्तु देकर छात्रों को समुचित सजावट के उपयोग के लिए कहा जा सकता है। नवीन बनावटों, विषय-वस्तु के औचित्य, व्यापक सजावट जैसे किनारी, कोने, प्रवेश द्वार आदि के लिए छात्रों को श्रेणी दी जानी चाहिए। सभी समूहों को एक अनुबंधित समय जैसे 2½ घंटे में अपना काम पूरा करने के लिए कहें। प्रतियोगिता की समाप्ति के बाद सभी कक्षाओं को प्रदर्शनी के अवलोकन के लिए एक अवसर दिया जाना चाहिए।

(i) Graph paper may be supplied to children. Using the squares to guide them, children can be asked to create a series of drawings telling a story. The story can be based on nature conservation or on themes like 'happiness'. 'work', etc The story should also be written.

(ii) Children can be encouraged to make symbols representing an idea that they want to project. For example,

(a) A shell can mean:
— secrets of nature
— wonders of the natural world

(b) A leaf can mean:
— regeneration
— freshness
— new life

Similarly, children can be asked to make symbolic designs to represent particular ideas. The best can be used to decorate charts, blackboards, stationary, etc.

5. Students should be encouraged to make their own patterns by joining dots, straight lines, or curves to form certain designs like petals or more complicated ones like house, human forms, stylised articles of daily use.

6. Innovative floor designs may be made for different occasions in the schools and children can be encouraged to try out new techniques, they can also make three dimensional forms using easily available material such as flower petals, grass, lentils, grains etc.

A rangoli competition can be arranged coinciding with a festival or an important school day. Teams consisting of 5-6 students may be allowed demarcated areas in the corridor, garden, courtyard, etc. (20' by 20'). A theme like 'Environment Day' on 'Diwali' can be given and the students asked to use appropriate decoration. Grades should be given for innovative designs, suitability to theme, extensive decoration, e.g., borders, corners, entrances, etc. Within a stipulated time, say, 2 1/2 hours, the teams can complete the work.

After the competition is over, all the classes should be given a chance to view the exhibits.

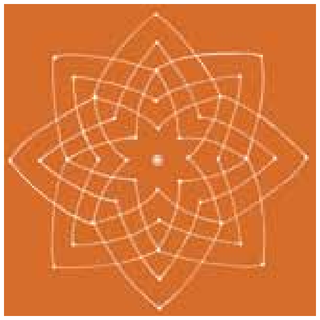

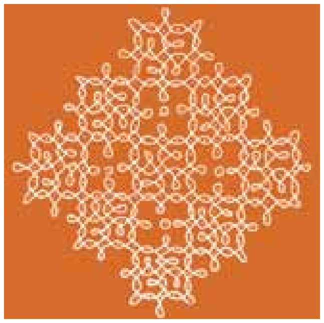

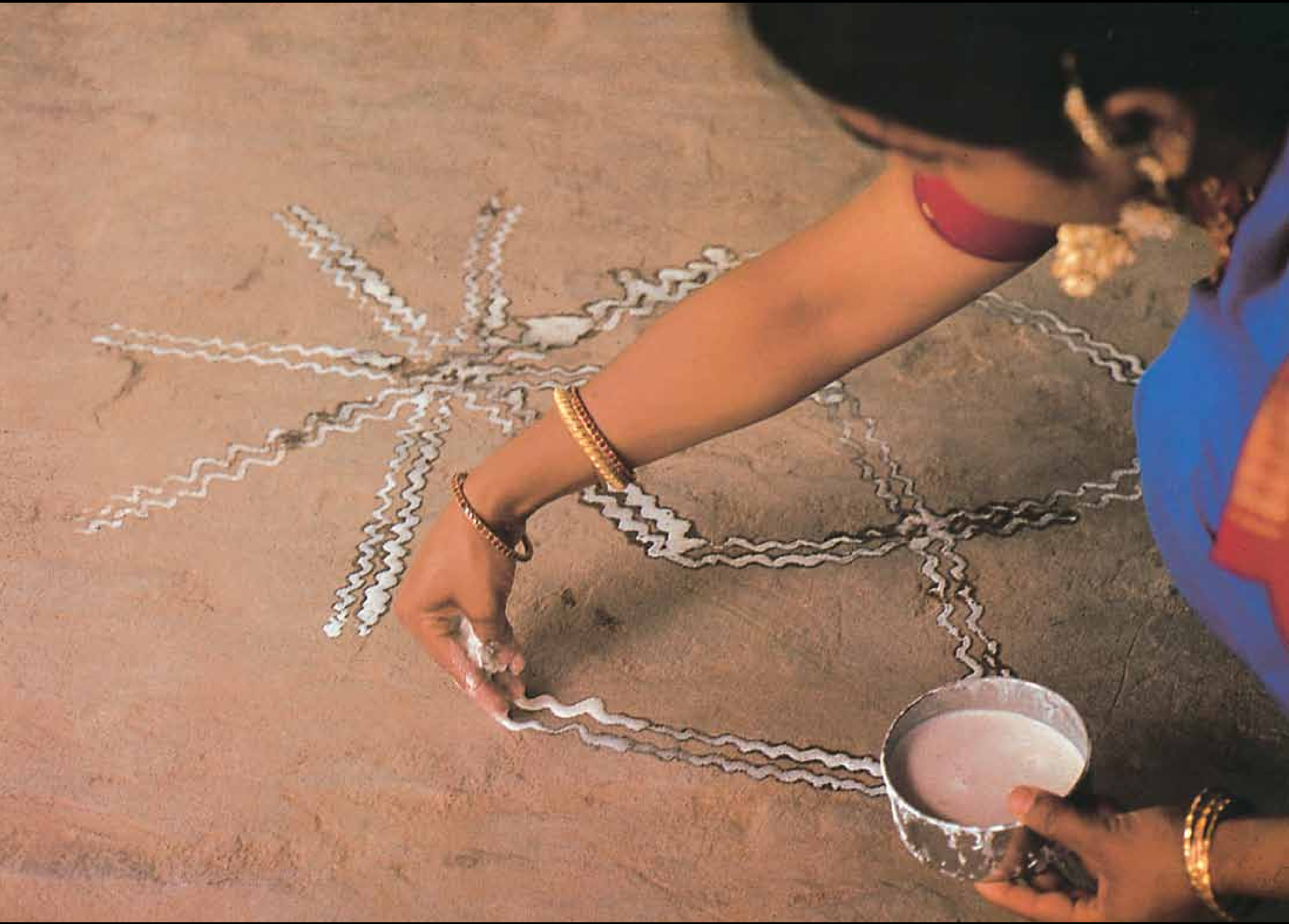

अभिव्यक्त रेखाएं
EXPRESSIONS IN LINES

1. रंगोलियां खुले हाथ से बनाई जाती हैं और जैसे-जैसे रंगोली बनती जाती है, वैसे-वैसे उसका स्वरूप विकसित होता जाता है। अक्सर रंगोली का स्वरूप केंन्द्र में बनाए गए बिंदु से शुरू होता है और वृत्त, वर्ग, त्रिकोणों और सीधी रेखाओं अथवा वक्र रेखाओं (घुमावों) के ज्यामितीय आकारों के संकेंद्रित रूपों में विकसित होता जाता है।

1. Floor designs are made freehand and the form evolves as the work is in progress. Very often the form or design begins at the centre with a dot and expands in concentric patterns of geometrical shapes, circles, squares, triangles and straight lines or curves.

अभिव्यक्त रेखाएं
EXPRESSIONS IN LINES

2. भारत के कुछ भागों विशेषकर दक्षिणी प्रांत में रंगोलियों को कल्पनात्मक रूप से बिंदुओं के समूह के साथ जोड़कर बनाया जाता है। यह बिंदु संख्या, मिश्रण (संयोजन) तथा स्वरूप में विविधता लिए होते हैं।

2. Floor designs in some parts of India, particularly in the southern regions, are imaginatively drawn to link an array of dots which vary in number, combination and form.

अभिव्यक्त रेखाएं
EXPRESSIONS IN LINES

3. हिमाचल प्रदेश के आंतरिक भागों में प्रचलित यह मांगलिक **चौक** पुरोहितों द्वारा सत्यनारायण की कथा के समय पूजा के स्थान को पवित्र करने के लिए बनाया जाता है। यह भव्य आकृति चावल के आटे से रेत पर बनाई जाती है और जमीन पर समान रूप से फैलाई जाती है। यह आकृति शुभसूचक **स्वास्तिक** चिन्ह पर आधारित है। देश के बहुत से भागों में और विशेष रूप से तमिलनाडु तथा आंध्र प्रदेश में इस परिकल्पना (डिज़ाईन) के अनेक रूप देखे जा सकते हैं।

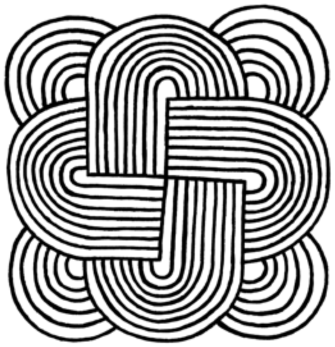

3. Popular in the interiors of Himachal Pradesh, this auspicious *chowk* is designed by *purohits* to sanctify the *puja* area for performing Satyanarayana Katha. Prepared with rice flour, this elegant floor design is made over sand, spread evenly on the floor. The design is based on the auspicious *swastika* symbols. In many parts of the country and specially in Tamil Nadu and Andhra Pradesh one sees variations of this design.

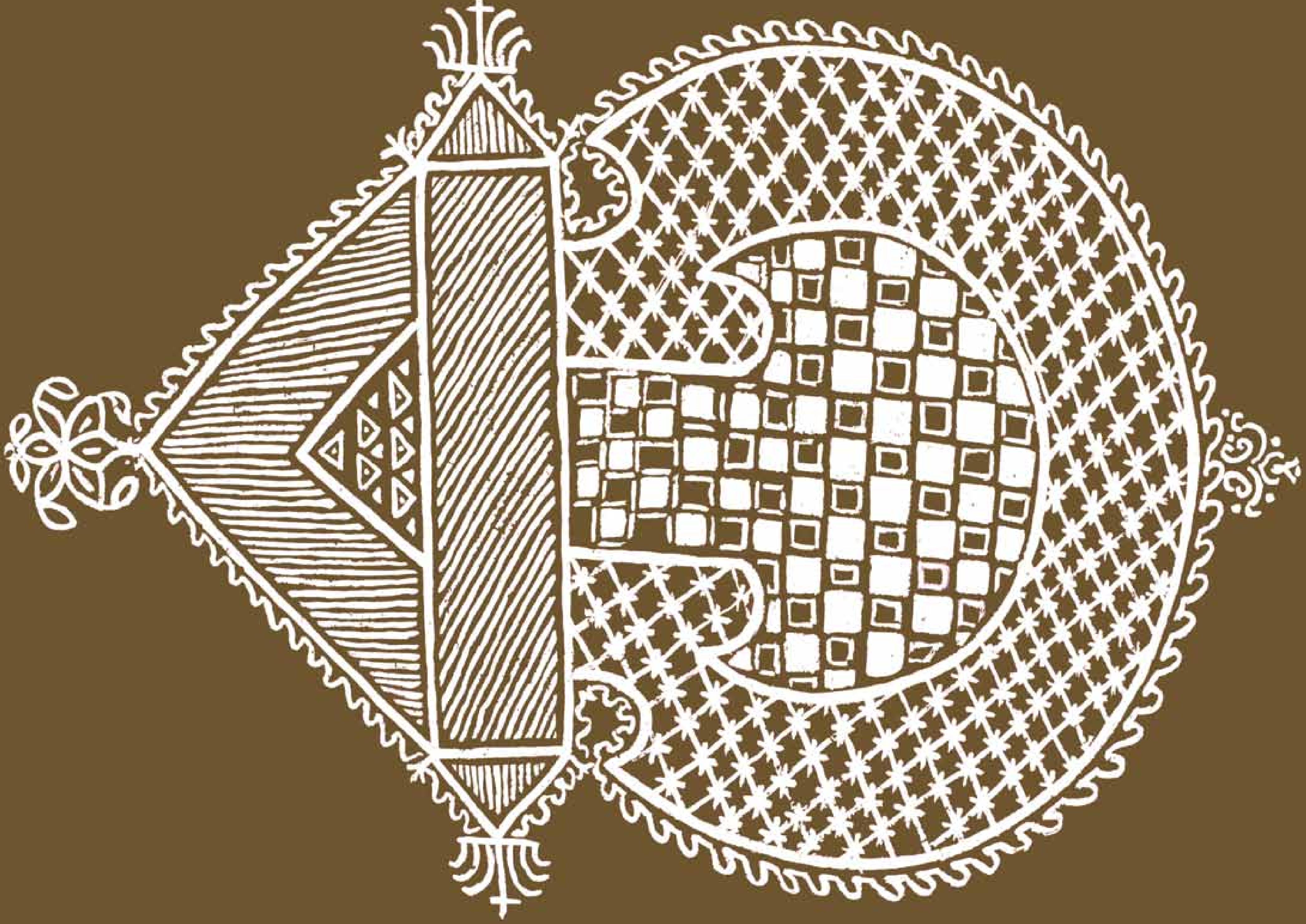

4. गणगौर का त्यौहार राजस्थान में गर्म हवा की गरमाहट लाता है। इस मौसम की मुख्य विशेषताओं को प्रदर्शित करने हेतु युवतियां **बीजनी, बारा, बावाराई** जैसे **मांडणा** की परिकल्पनाऐं (डिज़ाइन) बनाती हैं। कभी-कभी नयनाभिराम रंगोली बनाने के लिए **बीजनी** (पंखा) को कुशलतापूर्वक पांच या नौ के समूह में प्रस्तुत किया जाता है। पहले त्रिकोण आकार के पंखे के हत्थे को रेखांकित किया जाता है। फिर उसे रेखाओं और बनावटों से भरा जाता है, जबकि अर्द्ध गोलाकार पंखे की बनावट अलंकृत रूप में की जाती है।

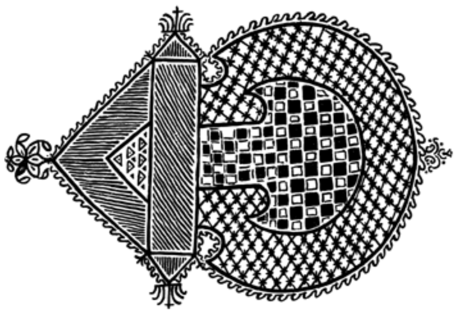

4. The festival of Gangaur in Rajasthan brings in the warmth of the summer air. Young women design relevant *mandanas* like *bijani*, *bara*, *bavarai*, etc., to highlight the specific characteristics of the season. *Bijanis* (fans) are sometimes skilfully shown in sets of five or nine to form spectacular floor designs. The triangular handle is drawn and filled with lines and motifs while the semicircular fan is decoratively designed.

5. महाराष्ट्र की महिलाएं ज्यामितीय आकारों और परिकल्पनाओं (डिज़ाईन) को रंगोली के रूप में प्रस्तुत करती हैं। सामाजिक तथा धार्मिक त्यौहारों को मनाने हेतु विपरीत रंगों से युक्त आकर्षक रंगोलियां बनाई जाती हैं।

5. Geometric shapes and designs in *rangolis* are preferred by women of Maharashtra. Attractive floor decorations with contrasting colours are prepared to celebrate social and religious festivals.

6. यह स्वास्तिक चिन्ह महाराष्ट्र की रंगोली में प्रमुख रूप से बनाया जाता है। चार प्रमुख दिशाओं की प्रतीक-स्वरूप और एक-दूसरे को काटने वाली दो रेखाएं वास्तव में विष्णु की शक्तिशाली भुजाओं के महत्व को दर्शाती हुई प्रतीत होती हैं। इस प्रतीक-चिन्ह द्वारा यह भाव व्यक्त किया गया है कि विश्वव्यापी जीवन-प्रक्रिया को गतिमान बनाए रखने के लिए पुरुष व स्त्री की सम्मिलित शक्ति एक सजीव तत्व का काम करती है। स्वास्तिक को ब्रह्मा की शक्तिशाली भुजाओं व सूर्यदेव के प्रतीक के रूप में ग्रहण किया जाता है। यह रंगोली स्वास्तिक चिन्ह को एक वर्गाकार रूप में प्रस्तुत करती है, जिसे विविध आकारों के बिंदुओं और मुड़ी हुई पंखुड़ियों के काल्पनिक रूप से भरा गया है।

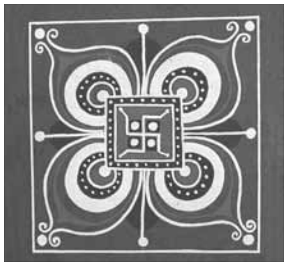

6. The *swastika* figures prominently in the *rangoli* floor designs of Maharashtra. Symbolising the four cardinal directions, the two intercepting lines are also believed to signify the powerful arms of Vishnu. The fact that the combined power of man and woman forms a vital element in setting the universal life process in motion, is portrayed by this symbol. The *swastika* is also interpreted as Brahma's powerful arms and as the motif of the Sun god. This *rangoli* incorporates the *swastika* in a square which is imaginatively filled with curved petals and dots in varying sizes.

7. पश्चिम बंगाल में सुरूचिपूर्ण ढंग से परिकल्पित, जटिल नमूनों सहित, रंगोलियों अथवा अल्पना को, घरों में अथवा शहरी आवासों के बाहर फर्श पर बनाया जाता है। इस चित्र में एक महिला को एक कमल की परिकल्पना (डिज़ाईन) के आस-पास **अल्पना** बनाते हुए दिखाया गया है।

7. Aesthetically designed and with intricate patterns of floor decorations or *alpana* in West Bengal are done in homes or even on the pavement outside urban dwellings. In this picture, a woman is shown preparing an *alpana* developed around a lotus design.

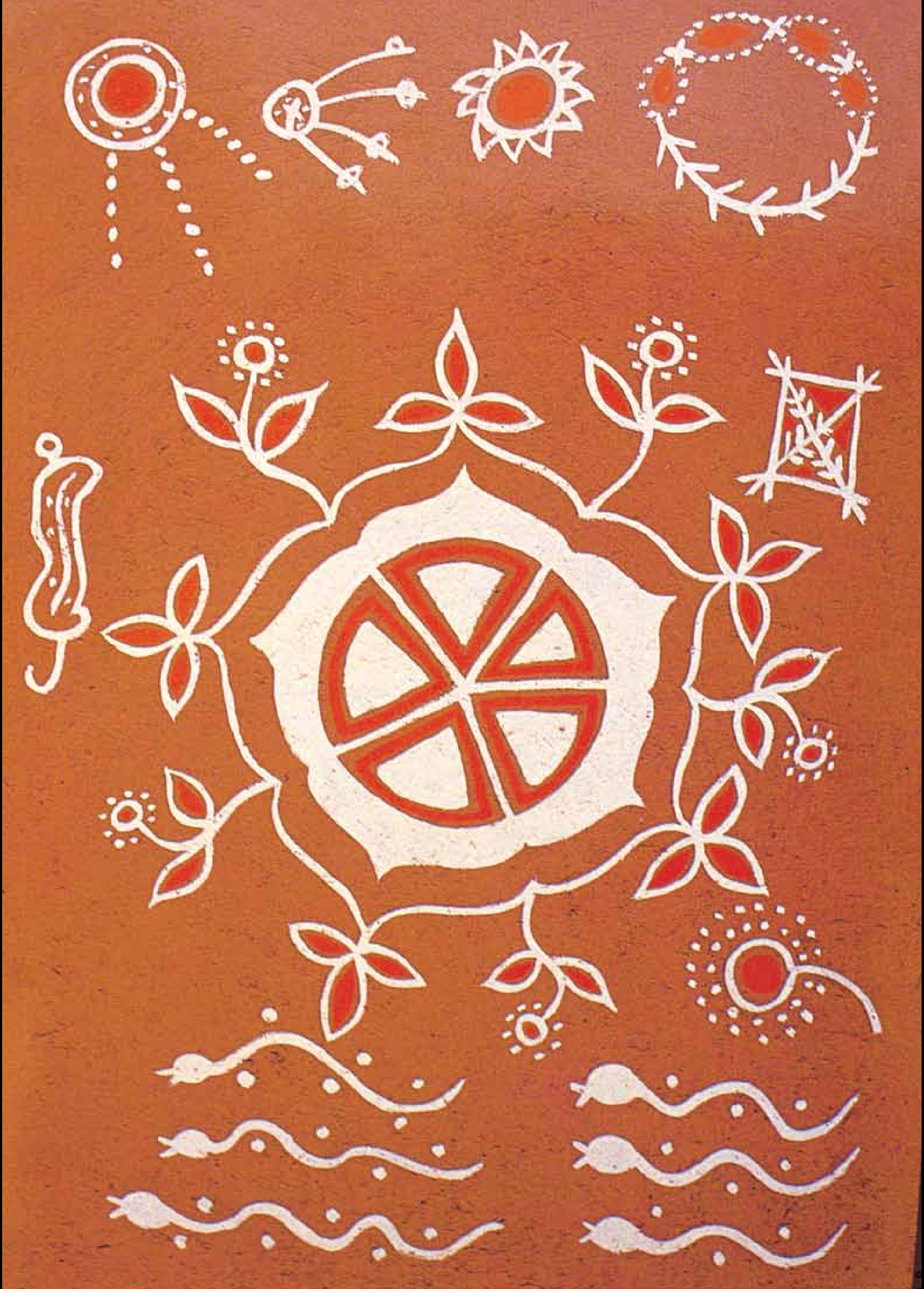

8. शेषनाग को समर्पित 'नागपंचमी' जैसे धार्मिक अवसरों पर पश्चिम बंगाल के घरों में जमीन को सजाने के लिए अक्सर प्रतीकात्मक **अल्पना** को बनाया जाता है। ज्यामितीय व फूल-पत्तियों वाले नमूनों के साथ, सर्प की आकृतियों के नमूनों वाली यह रंगोली चावल के आटे या सफेद चॉक से बनाई जाती है।

8. On religious occasions like Nagpanchami, which is dedicated to Shesh Nag, symbolic *alpana* floor decorations are commonly made in West Bengal homes. Portraying serpent figures alongside other geometrical and floral motifs, this design is made with rice paste or white chalk.

9. बिहार की **अरीपना** रंगोली में एक अपनी तरह का उत्सवात्मक पुट होता है। विविध प्रकार की उच्च स्तरीय आकृतियों और नमूनों से युक्त रंगोली जैसे, खिले हुए कमल को लम्बवत् जुड़े हुए नमूनों के साथ बनाया जाता है। इन्हें अक्सर दिवाली व अन्य स्थानीय त्यौहारों के अवसर पर बनाया जाता है। कुछ बेहतरीन व प्रसिद्ध **अरीपना** रंगोलियां बिहार राज्य में प्रचलित मधुबनी शैली के चित्रों में भी प्राप्त होती हैं। इस **अरीपना** रंगोली में पहले तारे की आकृति के आसपास फूल-पत्ती के नमूने बनाए जाते हैं, जो बाद में पंखुड़ियों में परिवर्तित होते हैं और फिर अंत में एक पूरी तरह खिले हुए कमल के रूप में उभर कर सामने आते हैं।

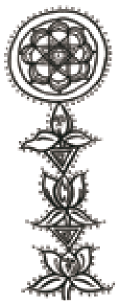

9. *Aripana* floor designs of Bihar have a ceremonial touch about them. Highly stylised figures and motifs such as the lotus in full bloom in a set of vertically connected patterns, etc., are frequently used during Diwali and other local festivals. Some of the best known *aripanas* are found in the Madhubani paintings popular in the State. This *aripana* has a floral motif developed around a star which recedes into petals and finally a lotus in full bloom.

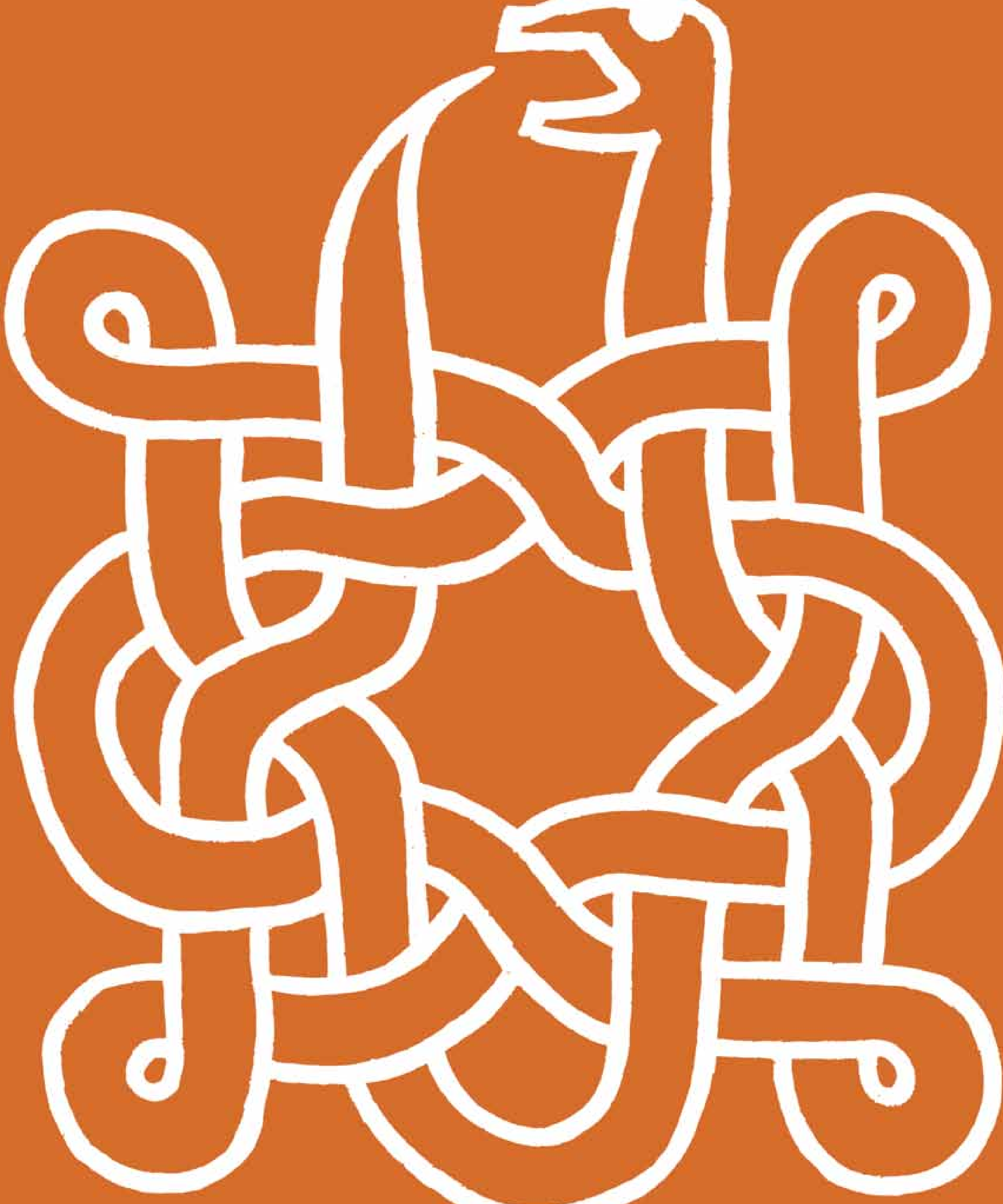

10. **पाखम्भा** मणिपुर की रंगोली-कला का एक रूप है। इस आलिंगनबद्ध सर्प की परिकल्पना (डिज़ाईन) को सर्प देवता की पूजा करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से प्रयुक्त किया जाता है। कुछ **पाखम्भा** नमूनों का तांत्रिक महत्व भी होता है। यहां दर्शाया गया यह जटिल नमूना दो सामानांतर व अखण्डित रेखाओं पर आधारित होता है, जो अंत में एक कुंडलित सर्प का आकार ले लेती है।

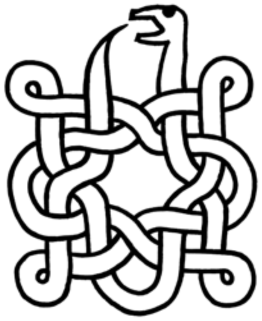

10. One of the forms of floor designs in Manipur, is the *pakhambha*. This entwined snake design is apparently used in worship of the serpent god. Some *pakhambha* designs also have *tantric* significance. This intricate design is based on two parallel continuous lines which take the shape of a coiled serpent.

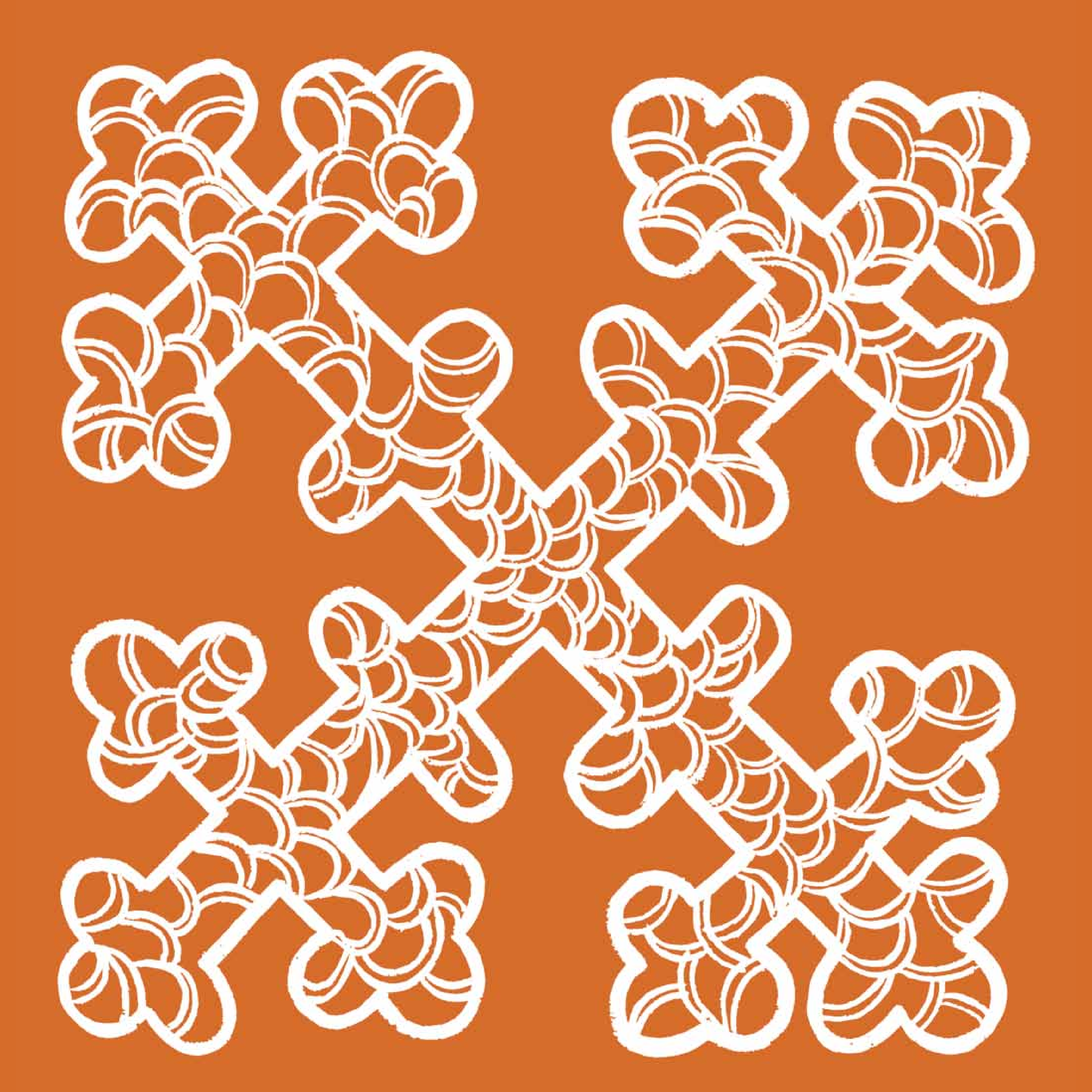

अभिव्यक्त रेखाएं
EXPRESSIONS IN LINES

11. मध्य प्रदेश की धार्मिक **मांडना** रंगोली की परिकल्पनाएं (डिज़ाईन) सूक्ष्म रूप से रूढ़ शैली के अनुसार अंकित की जाती हैं। यह सादी-सी **मांडना** रंगोली एकादशी और देवठान के अवसर पर बनाई जाती है। इसे केन्द्र में, एक-दूसरे को पार करती समानांतर रेखाओं पर सरल अलंकरण द्वारा काल्पनिक रूप से तैयार किया जाता है।

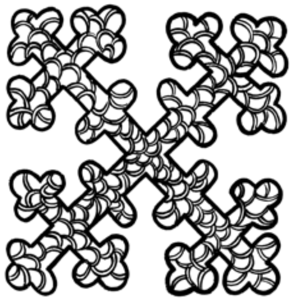

11. Ritual *mandana* designs of Madhya Pradesh, are subtly stylised. This simple *mandana* floor design, appropriately made for Ekadashi and Devuthan, is imaginatively developed using simple decorations on parallel lines crossing each other at the centre.

अभिव्यक्त रेखाएं
EXPRESSIONS IN LINES

12. राजस्थान का **मांडना** अपने **पगल्या** (पदचिन्हों) नमूनों के लिए जाना जाता है। धार्मिक त्यौहारों पर कोई भी मांडना, पगल्या के बिना पूरा नहीं होता। बिहार और बंगाल में भी पांवों के निशानों के इस प्रकार के नमूने प्रचलित हैं पर इनके समान राजस्थान के **पगल्या** नमूने पांवों के निशानों पर चित्र स्पष्ट रूप से प्रस्तुत नहीं करते। **पगल्या** को बनाने के लिए रेखाएं, बिंदू, त्रिकोण आदि को सौंदर्यात्मक रूप में सम्मिलित किया जाता है।

12. The *mandanas* of Rajasthan are known for their *pagalya* (footprint) motifs. For religious festivals, no ritual *mandana* is complete without incorporating a *pagalya*. As in Bengal and Bihar, where the use of footprint motifs is common, the *pagalyas* of Rajasthan do not present a clear picture of footprints. Lines, dots, triangles, etc are aesthetically assembled to compose a *pagalya*.

13. महाराष्ट्र के घरों में आकृतिपरक पशुओं और फूल-पत्तियों के नमूनों के साथ चित्रात्मक रंगोली भी बनाई जाती हैं। सज्जित रूपरेखा के साथ यह रंगोलियां बिहार तथा महाराष्ट्र की चित्रात्मक **अरीपना** तथा **झूंटी** भित्तिचित्रों से मिलती-जुलती होती है।

13. Pictorial *rangoli* designs with figurative animal and floral motifs are prepared in Maharashtrian homes. Outlined with decorative borders, these floor designs bear similarity to the pictorial *aripana* and *jhonti* wall designs of Bihar and Maharashtra.

अभिव्यक्त रेखाएं
EXPRESSIONS IN LINES

14. रंगोली की आकृतियों को दीवारों तथा कमरे के कोनों में बनाया जाता है। किनारी पर बनाई जाने वाली आकृति या बनावट **मुग्गलू** तथा **कोलम** बनावटों का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु की महिलाएं बनाती हैं। तीन से पांच पंक्तियों में समानांतर दूरी पर बनाए गए बिंदुओं सहित रुचिकर किनारी की बनावट पूजा के स्थान पर केन्द्रीय भू-सज्जा को आकर्षक बनाती है।

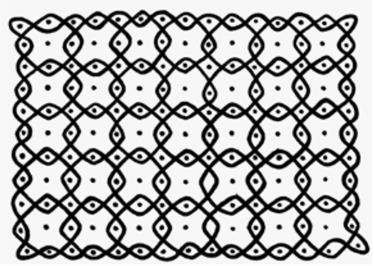

14. Designs are made along the walls and in the corners of the room. This border design is typical of the *muggulu* and *kolam* designs made by women in Andhra Pradesh and Tamil Nadu. Dainty border designs—with equidistant dots placed in three to five rows—help in highlighting the central floor decoration in the *puja* area.

15. तमिलनाडु में, गीली जमीन पर चावल के आटे या फिर पिसे हुए पत्थर के सफेद पाउडर कलमाव से **कोलम** रंगोलियां बनाई जाती हैं। सूखी सतहों पर चावल के आटे का उपयोग किया जाता है और विशेष अवसरों पर गीले पाउडर का प्रयोग करते समय दाहिने हाथ की बीच की अंगुली (मध्यमा) से रेखाएं खींची जाती हैं।

15. In Tamil Nadu, *the kolam* designs are drawn on the wet ground with powdered rice or the white powder of crushed stone known as *kalmav*. Rice paste is used on dry surfaces and for special occasions. While using wet paste, the lines are drawn with the middle finger of the right hand.

16. कुछ प्रदेशों में नाग-पूजा जन्म से ही लोगों के धार्मिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत के लगभग सभी भागों में सर्प-आकृतियों को रंगोली की बनावटों के रूप में चित्रित किया जाता है और बहुत ही श्रद्धा तथा आदर के साथ उनकी पूजा की जाती है। तमिलनाडु तथा कर्नाटक में प्रचलित यह प्रतीकात्मक **कोलम** दो समानांतर रेखाओं के समूह का समन्वय है, जो अपनी बनावट के अंत में कुंडलीकृत सर्पों का आकार ले लेती है।

16. Naga (snake) worship is an inherent part of the religious life of the people in several regions. Serpent figures are painted in the form of floor designs and worshipped with much awe and reverence in almost all parts of India. This symbolic *kolam*, commonly adopted in Tamil Nadu and Karnataka is an imaginative combination of two sets of parallel lines which take the shape of coiled serpents.

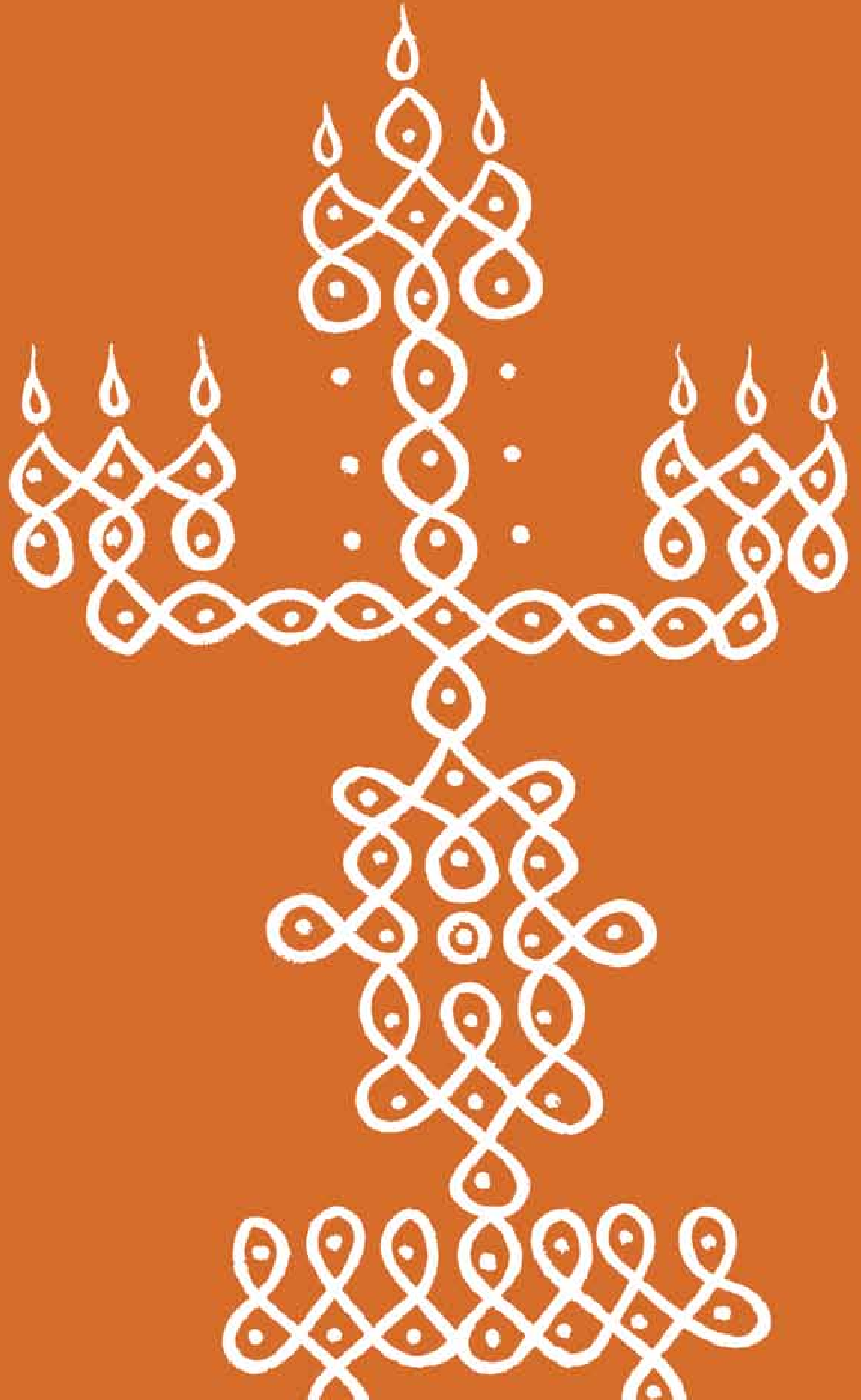

17. सम्पूर्ण भारत में, पीतल के परम्परागत दीयों को प्रज्ज्वलित करना, समारोहों और धार्मिक अनुष्ठानों का एक अनिवार्य अंग माना जाता है। कर्नाटक की यह सुरुचिपूर्ण रंगोली-**रंगावली** दीयों के लिए एक सुसज्जित आधार का काम करती है और इसे पूजा-स्थल पर बनाया जाता है। इसमें बिंदुओं को कुछ इस प्रकार बनाया जाता है कि वे मिलकर कुथी विलाकू अर्थात तेल या घी में भिगोई गई रुई की बत्ती से जलने वाले दीये का रूप धारण कर लेते हैं।

17. Lighting of traditional brass lamps constitutes an essential part of ceremonies and rituals all over India. This elegant floor design *rangavalli* of Karnataka, generally serves the purpose of a decorative base for lamps and is designed on the *puja* platform. The dots are drawn in such a way that they join to form a *kuthi vilakku*, a lamp burnt with cotton wicks dipped in oil or ghee.

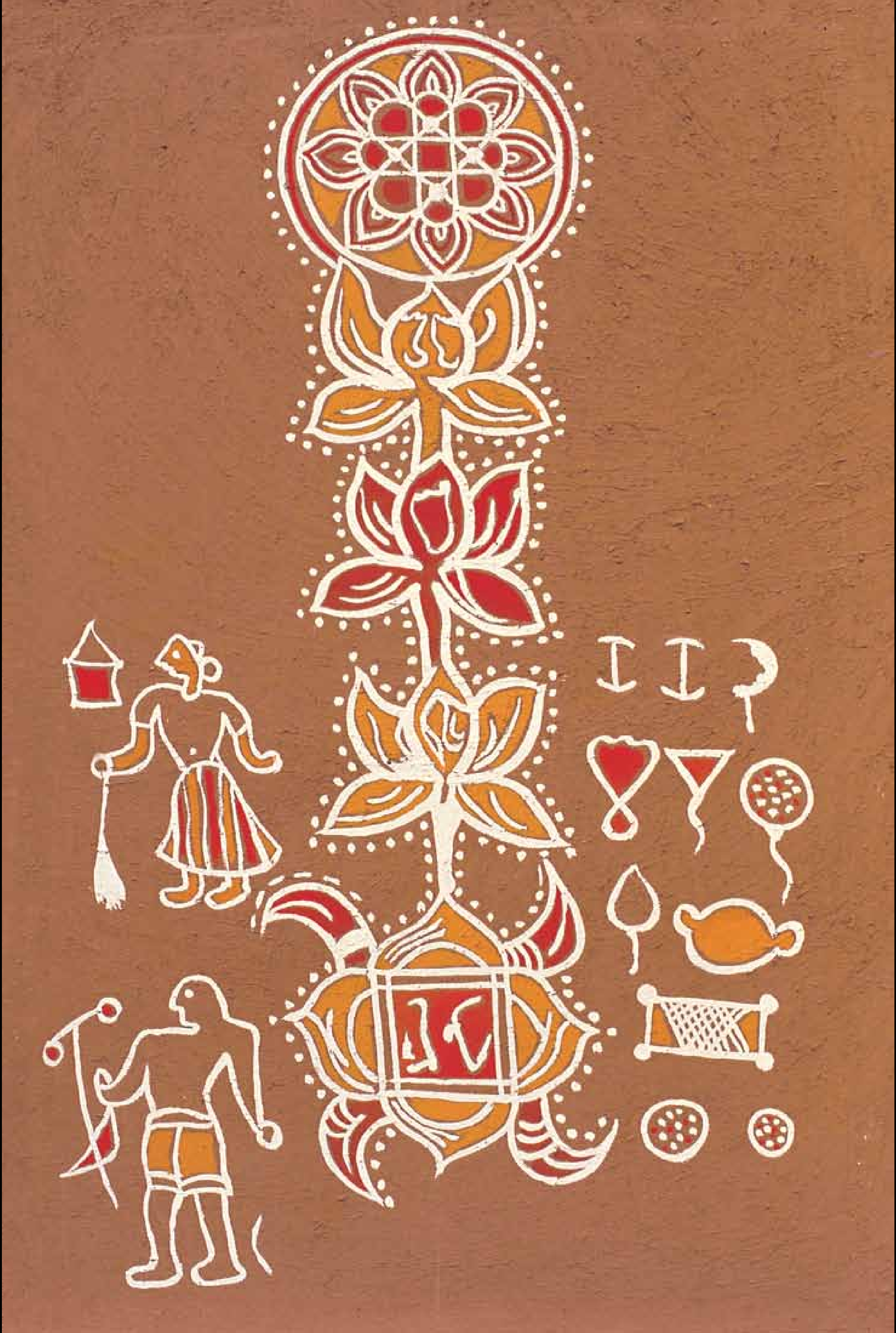

अभिव्यक्त रेखाएं
EXPRESSIONS IN LINES

18. बिहार में एकादशी तथा देवठान उत्सवों को मनाने के लिए चित्रात्मक **अरीपना** रंगोलियों से सजावट की जाती है। दीवारों को सजाने के लिए सुरुचिपूर्ण कमल तथा आयतों और त्रिकोणों के आस-पास बने प्रतीकात्मक नमूनों को भी प्रयोग में लाया जाता है।

18. Ekadashi and Devuthan and festivities in Bihar are marked by pictorial *aripana* floor decorations. Comprising elegant lotus and symbolic motifs woven around squares and triangles, these designs are also used for purposes of wall decoration.

19. बंगाल में ऐसी मान्यता है कि रंगोली की बनावटों में देवी का आह्वान करने के लिए मांगलिक प्रतीकों को बनाने पर घर में सुख-समृद्धि आती है। यह **अल्पना** लक्ष्मी-पूजा के अवसर पर बनाई जाती है। इस बनावट में वर्ग को सजाने के लिए अन्य चित्रात्मक प्रतीकों के साथ लक्ष्मी के पद्‌चिन्हों का भी प्रयोग किया जाता है और यह इस बनावट की एक अपनी विशिष्टता है।

19. In Bengal, it is believed that floor designs using auspicious symbols to invoke the goddess will bring good luck, and prosperity to the household. This *alpana* floor design is made for Lakshmi Puja. The use of Lakshmi's footprints alongwith other pictorial symbols decorating the square is a unique feature of this design.

20. गुजरात की **संथिया** रंगोली को बनाने में ग्रामीण घरों में अधिक लोकप्रिय सादे और सुरुचिपूर्ण नमूने प्रयोग में लाए जाते हैं। दिवाली और होली के अवसर पर **संथिया** को बनाने पर ही घर के अंदर की सजावट पूर्ण होती है। इनमें से अधिकतर रंगोलियां अपने स्वरूपों अर्थात् आकार-प्रकार में एक-दूसरे से भिन्न होती हैं और उनका अपना एक विशिष्ट सौंदर्य है। यह रंगोली वृत्त के आस-पास त्रिकोणात्मक फूल-पत्तियों के नमूनों का प्रयोग करते हुए रूढ़ शैली में बनाई जाती है।

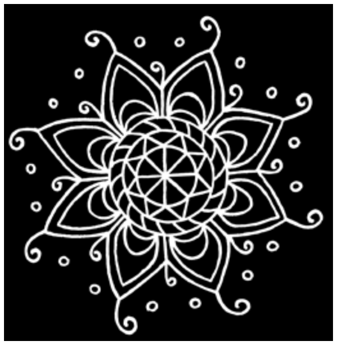

20. *Santhias*, the floor designs of Gujarat use simple and elegant motifs common in rural homes. *Santhias* essentially serve the purpose of interior home decoration during Diwali and Holi celebrations. Many of these designs are asymmetrical in form and have a unique beauty of their own. The design is developed around a circle using triangular and floral patterns in the stylised manner.

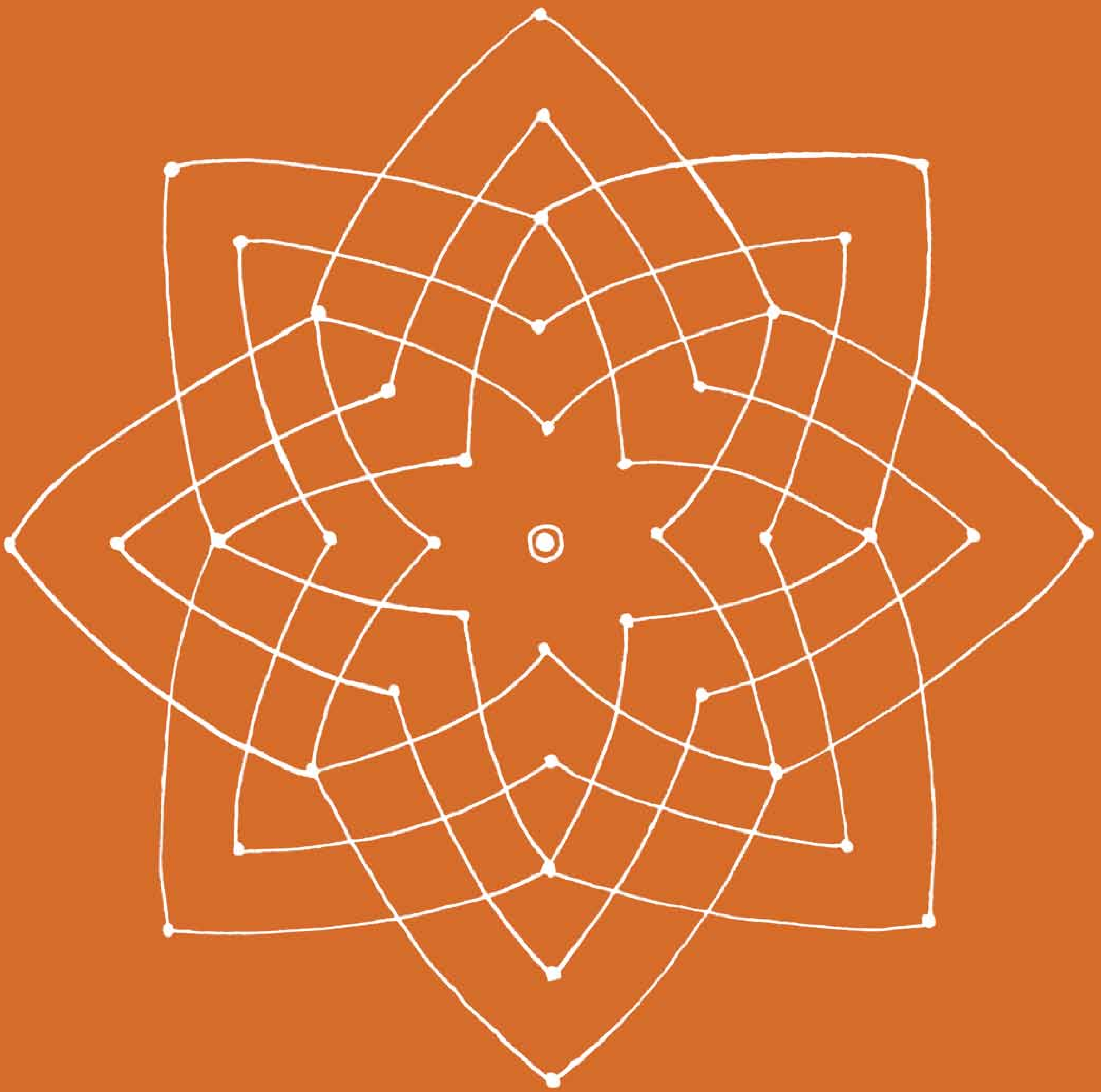

21. समृद्धि अर्थात् धन की देवी-लक्ष्मी से जुड़ा हृदयकमल, तमिलनाडु की मांगलिक **कोलम** रंगोली है, जो अक्सर शुक्रवार के दिन पूजा-घर को सजाने हेतु बनाई जाती है। इनमें लक्ष्मी को सामान्यतया भव्य कमल के फूल के अंदर बैठे हुए प्रदर्शित किया जाता है। इस रंगोली को बनाने के लिए सात से नौ या फिर ग्यारह बिंदुओं को तिरछा बनाया जाता है, ताकि गोलाकार घेरा बन सके।

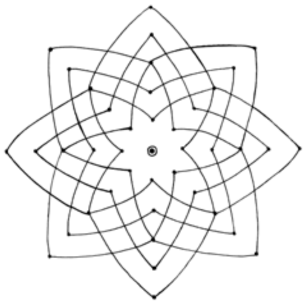

21. The Hridayakamal, associated with Lakshmi, the goddess of wealth, is an auspicious *kolam* design of Tamil Nadu which generally decorates the *puja* area on Fridays. Lakshmi is commonly depicted as seated inside a magnificent lotus flower. The size and designing technique of this floor design varies from seven to nine or eleven dots placed diagonally across to form a circle.

22. केरल की रंगोली को फूलों, पत्तियों तथा घास आदि से निपुणतापूर्वक बनाया जाता है। इसे **अनियाल** या **पूवू** (फूल) **कोलम** के नाम से भी जाना जाता है। यह रंगोलियां सरल ज्यामितीय परिकल्पनाओं पर आधारित होती हैं। इस रंगोली के बीचों-बीच अक्सर पीतल का एक दीया रखा जाता है।

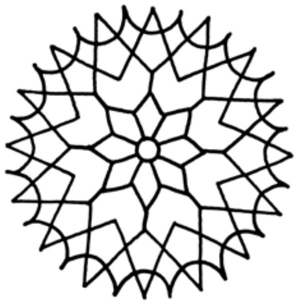

22. Floor decorations in Kerala are deftly designed with flowers, leaves, grass, etc. Also known as *aniyal* or *puvu* (flower) *kolam*, these designs are based on simple geometrical patterns. A brass lamp is generally placed at the centre of the floor design.

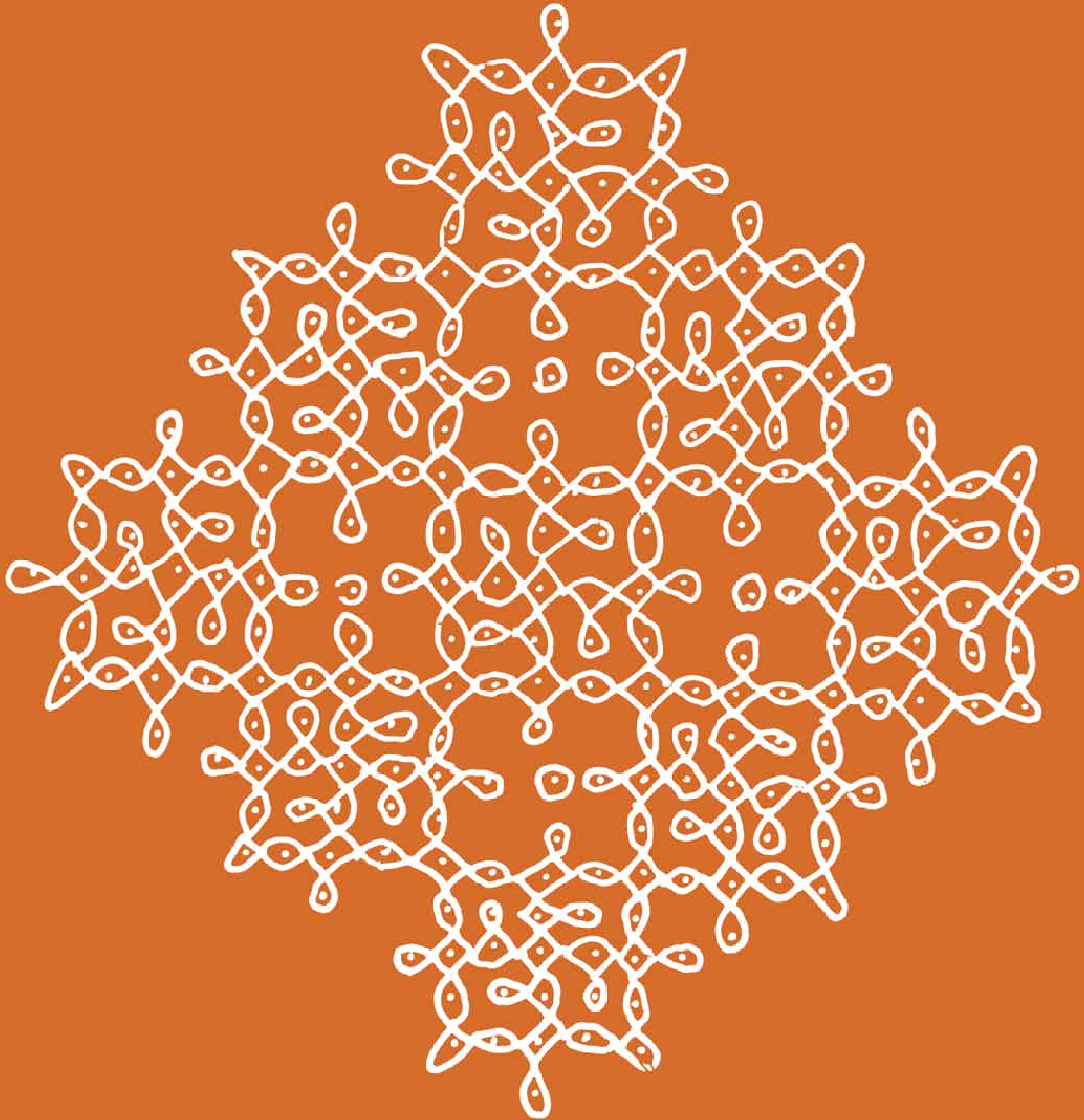

23. आंध्र प्रदेश की रंगोली-**मुग्गलू** की बनावट तमिलनाडु के **कोलम** से बहुत मिलती-जुलती है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें अवरोहात्मक क्रम में नियमित दूरी पर बनाए गए बिंदुओं का कलात्मक प्रयोग किया जाता है।

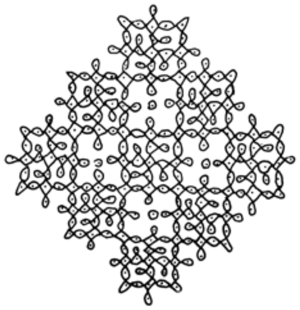

23. *Muggulu* floor designs of Andhra Pradesh are almost identical to the *kolams* of Tamil Nadu, both in design and technique. The skill lies in the imaginative use of the dots which are laid out at regular intervals in descending order.

अभिव्यक्त रेखाएं

EXPRESSIONS IN LINES

1

रंगोलियां खुले हाथ से बनाई जाती हैं और जैसे-जैसे रंगोली बनती जाती है, वैसे-वैसे उसका स्वरूप विकसित होता जाता है। अक्सर रंगोली का स्वरूप केंन्द्र में बनाए गए बिंदु से शुरू होता है और वृत्त, वर्ग, त्रिकोणों और सीधी रेखाओं अथवा वक्र रेखाओं (घुमावों) के ज्यामितीय आकारों के संकेंद्रित रूपों में विकसित होता जाता है।

2

भारत के कुछ भागों विशेषकर दक्षिणी प्रांत में रंगोलियों को कल्पनात्मक रूप से बिंदुओं के समूह के साथ जोड़कर बनाया जाता है। यह बिंदु संख्या, मिश्रण (संयोजन) तथा स्वरूप में विविधता लिए होते हैं।

3

हिमाचल प्रदेश के आंतरिक भागों में प्रचलित यह मांगलिक **चौक** पुरोहितों द्वारा सत्यनारायण की कथा के समय पूजा के स्थान को पवित्र करने के लिए बनाया जाता है। यह भव्य आकृति चावल के आटे से रेत पर बनाई जाती है और जमीन पर समान रूप से फैलाई जाती है। यह आकृति शुभसूचक **स्वास्तिक** चिन्ह पर आधारित है। देश के बहुत से भागों में और विशेष रूप से तमिलनाडु तथा आंध्र प्रदेश में इस परिकल्पना (डिज़ाईन) के अनेक रूप देखे जा सकते हैं।

4

गणगौर का त्यौहार राजस्थान में गर्म हवा की गरमाहट लाता है। इस मौसम की मुख्य विशेषताओं को प्रदर्शित करने हेतु युवतियां **बीजनी, बारा, बावाराई** जैसे **मांडणा** की परिकल्पनाऐं (डिज़ाइन) बनाती हैं। कभी-कभी नयनाभिराम रंगोली बनाने के लिए **बीजनी** (पंखा) को कुशलतापूर्वक पांच या नौ के समूह में प्रस्तुत किया जाता है। पहले त्रिकोण आकार के पंखे के हत्थे को रेखांकित किया जाता है। फिर उसे रेखाओं और बनावटों से भरा जाता है, जबकि अर्द्ध गोलाकार पंखे की बनावट अलंकृत रूप में की जाती है।

5

महाराष्ट्र की महिलाएं ज्यामितीय आकारों और परिकल्पनाओं (डिज़ाईन) को रंगोली के रूप में प्रस्तुत करती हैं। सामाजिक तथा धार्मिक त्यौहारों को मनाने हेतु विपरीत रंगों से युक्त आकर्षक रंगोलियां बनाई जाती हैं।

6

यह स्वास्तिक चिन्ह महाराष्ट्र की रंगोली में प्रमुख रूप से बनाया जाता है। चार प्रमुख दिशाओं की प्रतीक-स्वरूप और एक-दूसरे को काटने वाली दो रेखाएं वास्तव में विष्णु की शक्तिशाली भुजाओं के महत्व को दर्शाती हुई प्रतीत होती हैं। इस प्रतीक-चिन्ह द्वारा यह भाव व्यक्त किया गया है कि विश्वव्यापी जीवन-प्रक्रिया को गतिमान बनाए रखने के लिए पुरुष व स्त्री की सम्मिलित शक्ति एक सजीव तत्व का काम करती है। स्वास्तिक को ब्रह्मा की शक्तिशाली भुजाओं व सूर्यदेव के प्रतीक के रूप में ग्रहण किया जाता है। यह रंगोली स्वास्तिक चिन्ह को एक वर्गाकार रूप में प्रस्तुत करती है, जिसे विविध आकारों के बिंदुओं और मुड़ी हुई पंखुड़ियों के काल्पनिक रूप से भरा गया है।

7

पश्चिम बंगाल में सुरूचिपूर्ण ढंग से परिकल्पित, जटिल नमूनों सहित, रंगोलियों अथवा अल्पना को, घरों में अथवा शहरी आवासों के बाहर फर्श पर बनाया जाता है। इस चित्र में एक महिला को एक कमल की परिकल्पना (डिज़ाईन) के आस-पास **अल्पना** बनाते हुए दिखाया गया है।

8

शेषनाग को समर्पित 'नागपंचमी' जैसे धार्मिक अवसरों पर पश्चिम बंगाल के घरों में जमीन को सजाने के लिए अक्सर प्रतीकात्मक **अल्पना** को बनाया जाता है। ज्यामितीय व फूल-पत्तियों वाले नमूनों के साथ, सर्प की आकृतियों के नमूनों वाली यह रंगोली चावल के आटे या सफेद चॉक से बनाई जाती है।

9

बिहार की **अरीपना** रंगोली में एक अपनी तरह का उत्सवात्मक पुट होता है। विविध प्रकार की उच्च स्तरीय आकृतियों और नमूनों से युक्त रंगोली जैसे, खिले हुए कमल को लम्बवत् जुड़े हुए नमूनों के साथ बनाया जाता है। इन्हें अक्सर दिवाली व अन्य स्थानीय त्यौहारों के अवसर पर बनाया जाता है। कुछ बेहतरीन व प्रसिद्ध **अरीपना** रंगोलियां बिहार राज्य में प्रचलित मधुबनी शैली के चित्रों में भी प्राप्त होती हैं। इस **अरीपना** रंगोली में पहले तारे की आकृति के आसपास फूल-पत्ती के नमूने बनाए जाते हैं, जो बाद में पंखुड़ियों में परिवर्तित होते हैं और फिर अंत में एक पूरी तरह खिले हुए कमल के रूप में उभर कर सामने आते हैं।

10

पाखम्भा मणिपुर की रंगोली-कला का एक रूप है। इस आलिंगनबद्ध सर्प की परिकल्पना (डिज़ाईन) को सर्प देवता की पूजा करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से प्रयुक्त किया जाता है। कुछ **पाखम्भा** नमूनों का तांत्रिक महत्व भी होता है। यहां दर्शाया गया यह जटिल नमूना दो सामानांतर व अखण्डित रेखाओं पर आधारित होता है, जो अंत में एक कुंडलित सर्प का आकार ले लेती है।

11

मध्य प्रदेश की धार्मिक **मांडना** रंगोली की परिकल्पनाएं (डिज़ाईन) सूक्ष्म रूप से रूढ़ शैली के अनुसार अंकित की जाती हैं। यह सादी-सी **मांडना** रंगोली एकादशी और देवठान के अवसर पर बनाई जाती है। इसे केन्द्र में, एक-दूसरे को पार करती समानांतर रेखाओं पर सरल अलंकरण द्वारा काल्पनिक रूप से तैयार किया जाता है।

12

राजस्थान का **मांडना** अपने **पगल्या** (पदचिन्हों) नमूनों के लिए जाना जाता है। धार्मिक त्यौहारों पर कोई भी मांडना, पगल्या के बिना पूरा नहीं होता। बिहार और बंगाल में भी पांवों के निशानों के इस प्रकार के नमूने प्रचलित हैं पर इनके समान राजस्थान के **पगल्या** नमूने पांवों के निशानों पर चित्र स्पष्ट रूप से प्रस्तुत नहीं करते। **पगल्या** को बनाने के लिए रेखाएं, बिंदू, त्रिकोण आदि को सौंदर्यात्मक रूप में सम्मिलित किया जाता है।

13

महाराष्ट्र के घरों में आकृतिपरक पशुओं और फूल-पत्तियों के नमूनों के साथ चित्रात्मक रंगोली भी बनाई जाती हैं। सज्जित रूपरेखा के साथ यह रंगोलियां बिहार तथा महाराष्ट्र की चित्रात्मक **अरीपना** तथा **झूंटी** भित्तिचित्रों से मिलती-जुलती होती है।

14

रंगोली की आकृतियों को दीवारों तथा कमरे के कोनों में बनाया जाता है। किनारी पर बनाई जाने वाली आकृति या बनावट **मुग्गलू** तथा **कोलम** बनावटों का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु की महिलाएं बनाती हैं। तीन से पांच पंक्तियों में समानांतर दूरी पर बनाए गए बिंदुओं सहित रुचिकर किनारी की बनावट पूजा के स्थान पर केन्द्रीय भू-सज्जा को आकर्षक बनाती है।

15

तमिलनाडु में, गीली जमीन पर चावल के आटे या फिर पिसे हुए पत्थर के सफेद पाउडर कलमाव से कोलम रंगोलियां बनाई जाती हैं। सूखी सतहों पर चावल के आटे का उपयोग किया जाता है और विशेष अवसरों पर गीले पाउडर का प्रयोग करते समय दाहिने हाथ की बीच की अंगुली (मध्यमा) से रेखाएं खींची जाती हैं।

16

कुछ प्रदेशों में नाग-पूजा जन्म से ही लोगों के धार्मिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत के लगभग सभी भागों में सर्प-आकृतियों को रंगोली की बनावटों के रूप में चित्रित किया जाता है और बहुत ही श्रद्धा तथा आदर के साथ उनकी पूजा की जाती है। तमिलनाडु तथा कर्नाटक में प्रचलित यह प्रतीकात्मक कोलम दो समानांतर रेखाओं के समूह का समन्वय है, जो अपनी बनावट के अंत में कुंडलीकृत सर्पों का आकार ले लेती है।

17

सम्पूर्ण भारत में, पीतल के परम्परागत दीयों को प्रज्ज्वलित करना, समारोहों और धार्मिक अनुष्ठानों का एक अनिवार्य अंग माना जाता है। कर्नाटक की यह सुरुचिपूर्ण रंगोली-रंगावली दीयों के लिए एक सुसज्जित आधार का काम करती है और इसे पूजा-स्थल पर बनाया जाता है। इसमें बिंदुओं को कुछ इस प्रकार बनाया जाता है कि वे मिलकर कुथी विलाकू अर्थात तेल या घी में भिगोई गई रुई की बत्ती से जलने वाले दीये का रूप धारण कर लेते हैं।

18

बिहार में एकादशी तथा देवठान उत्सवों को मनाने के लिए चित्रात्मक अरीपना रंगोलियों से सजावट की जाती है। दीवारों को सजाने के लिए सुरुचिपूर्ण कमल तथा आयतों और त्रिकोणों के आस-पास बने प्रतीकात्मक नमूनों को भी प्रयोग में लाया जाता है।

19

बंगाल में ऐसी मान्यता है कि रंगोली की बनावटों में देवी का आह्वान करने के लिए मांगलिक प्रतीकों को बनाने पर घर में सुख-समृद्धि आती है। यह अल्पना लक्ष्मी-पूजा के अवसर पर बनाई जाती है। इस बनावट में वर्ग को सजाने के लिए अन्य चित्रात्मक प्रतीकों के साथ लक्ष्मी के पद्चिन्हों का भी प्रयोग किया जाता है और यह इस बनावट की एक अपनी विशिष्टता है।

20

गुजरात की संथिया रंगोली को बनाने में ग्रामीण घरों में अधिक लोकप्रिय सादे और सुरुचिपूर्ण नमूने प्रयोग में लाए जाते हैं। दिवाली और होली के अवसर पर संथिया को बनाने पर ही घर के अंदर की सजावट पूर्ण होती है। इनमें से अधिकतर रंगोलियां अपने स्वरूपों अर्थात् आकार-प्रकार में एक-दूसरे से भिन्न होती हैं और उनका अपना एक विशिष्ट सौंदर्य है। यह रंगोली वृत्त के आस-पास त्रिकोणात्मक फूल-पत्तियों के नमूनों का प्रयोग करते हुए रूढ़ शैली में बनाई जाती है।

21

समृद्धि अर्थात् धन की देवी-लक्ष्मी से जुड़ा हृदयकमल, तमिलनाडु की मांगलिक कोलम रंगोली है, जो अक्सर शुक्रवार के दिन पूजा-घर को सजाने हेतु बनाई जाती है। इनमें लक्ष्मी को सामान्यतया भव्य कमल के फूल के अंदर बैठे हुए प्रदर्शित किया जाता है। इस रंगोली को बनाने के लिए सात से नौ या फिर ग्यारह बिंदुओं को तिरछा बनाया जाता है, ताकि गोलाकार घेरा बन सके।

22

केरल की रंगोली को फूलों, पत्तियों तथा घास आदि से निपुणतापूर्वक बनाया जाता है। इसे अनियाल या पूवू (फूल) कोलम के नाम से भी जाना जाता है। यह रंगोलियां सरल ज्यामितीय परिकल्पनाओं पर आधारित होती हैं। इस रंगोली के बीचों-बीच अक्सर पीतल का एक दीया रखा जाता है।

23

आंध्र प्रदेश की रंगोली-मुग्गलू की बनावट तमिलनाडु के कोलम से बहुत मिलती-जुलती है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें अवरोहात्मक क्रम में नियमित दूरी पर बनाए गए बिंदुओं का कलात्मक प्रयोग किया जाता है।

अभिव्यक्त रेखाएं
EXPRESSIONS IN LINES

1

Floor designs are made freehand and the form evolves as the work is in progress. Very often the form or design begins at the centre with a dot and expands in concentric patterns of geometrical shapes, circles, squares, triangles and straight lines or curves.

2

Floor designs in some parts of India, particularly in the southern regions, are imaginatively drawn to link an array of dots which vary in number, combination and form.

3

Popular in the interiors of Himachal Pradesh, this auspicious *chowk* is designed by *purohits* to sanctify the *puja* area for performing Satyanarayana Katha. Prepared with rice flour, this elegant floor design is made over sand, spread evenly on the floor. The design is based on the auspicious *swastika* symbols. In many parts of the country and specially in Tamil Nadu and Andhra Pradesh one sees variations of this design.

4

The festival of Gangaur in Rajasthan brings in the warmth of the summer air. Young women design relevant *mandanas* like *bijani*, *bara*, *bavarai*, etc., to highlight the specific characteristics of the season. *Bijanis* (fans) are sometimes skilfully shown in sets of five or nine to form spectacular floor designs. The triangular handle is drawn and filled with lines and motifs while the semicircular fan is decoratively designed.

5

Geometric shapes and designs in *rangolis* are preferred by women of Maharashtra. Attractive floor decorations with contrasting colours are prepared to celebrate social and religious festivals.

6

The *swastika* figures prominently in the *rangoli* floor designs of Maharashtra. Symbolising the four cardinal directions, the two intercepting lines are also believed to signify the powerful arms of Vishnu. The fact that the combined power of man and woman forms a vital element in setting the universal life process in motion, is portrayed by this symbol. The *swastika* is also interpreted as Brahma's powerful arms and as the motif of the Sun god. This *rangoli* incorporates the *swastika* in a square which is imaginatively filled with curved petals and dots in varying sizes.

7

Aesthetically designed and with intricate patterns of floor decorations or *alpana* in West Bengal are done in homes or even on the pavement outside urban dwellings. In this picture, a woman is shown preparing an *alpana* developed around a lotus design.

8

On religious occasions like Nagpanchami, which is dedicated to Shesh Nag, symbolic *alpana* floor decorations are commonly made in West Bengal homes. Portraying serpent figures alongside other geometrical and floral motifs, this design is made with rice paste or white chalk.

9

Aripana floor designs of Bihar have a ceremonial touch about them. Highly stylised figures and motifs such as the lotus in full bloom in a set of vertically connected patterns, etc., are frequently used during Diwali and other local festivals. Some of the best known *aripanas* are found in the Madhubani paintings popular in the State. This *aripana* has a floral motif developed around a star which recedes into petals and finally a lotus in full bloom.

10

One of the forms of floor designs in Manipur, is the *pakhambha*. This entwined snake design is apparently used in worship of the serpent god. Some *pakhambha* designs also have *tantric* significance. This intricate design is based on two parallel continuous lines which take the shape of a coiled serpent.

11

Ritual *mandana* designs of Madhya Pradesh, are subtly stylised. This simple *mandana* floor design, appropriately made for Ekadashi and Devuthan, is imaginatively developed using simple decorations on parallel lines crossing each other at the centre.

12

The *mandanas* of Rajasthan are known for their *pagalya* (footprint) motifs. For religious festivals, no ritual *mandana* is complete without incorporating a *pagalya*. As in Bengal and Bihar, where the use of footprint motifs is common, the *pagalyas* of Rajasthan do not present a clear picture of footprints. Lines, dots, triangles, etc are aesthetically assembled to compose a *pagalya*.

13

Pictorial *rangoli* designs with figurative animal and floral motifs are prepared in Maharashtrian homes. Outlined with decorative borders, these floor designs bear similarity to the pictorial *aripana* and *jhonti* wall designs of Bihar and Maharashtra.

14

Designs are made along the walls and in the corners of the room. This border design is typical of the *muggulu* and *kolam* designs made by women in Andhra Pradesh and Tamil Nadu. Dainty border designs—with equidistant dots placed in three to five rows—help in highlighting the central floor decoration in the *puja* area.

15

In Tamil Nadu, *the kolam* designs are drawn on the wet ground with powdered rice or the white powder of crushed stone known as *kalmav*. Rice paste is used on dry surfaces and for special occasions. While using wet paste, the lines are drawn with the middle finger of the right hand.

16

Naga (snake) worship is an inherent part of the religious life of the people in several regions. Serpent figures are painted in the form of floor designs and worshipped with much awe and reverence in almost all parts of India. This symbolic *kolam*, commonly adopted in Tamil Nadu and Karnataka is an imaginative combination of two sets of parallel lines which take the shape of coiled serpents.

17

Lighting of traditional brass lamps constitutes an essential part of ceremonies and rituals all over India. This elegant floor design *rangavalli* of Karnataka, generally serves the purpose of a decorative base for lamps and is designed on the *puja* platform. The dots are drawn in such a way that they join to form a *kuthi vilakku*, a lamp burnt with cotton wicks dipped in oil or ghee.

18

Ekadashi and Devuthan and festivities in Bihar are marked by pictorial *aripana* floor decorations. Comprising elegant lotus and symbolic motifs woven around squares and triangles, these designs are also used for purposes of wall decoration.

19

In Bengal, it is believed that floor designs using auspicious symbols to invoke the goddess will bring good luck, and prosperity to the household. This *alpana* floor design is made for Lakshmi Puja. The use of Lakshmi's footprints alongwith other pictorial symbols decorating the square is a unique feature of this design.

20

Santhias, the floor designs of Gujarat use simple and elegant motifs common in rural homes. *Santhias* essentially serve the purpose of interior home decoration during Diwali and Holi celebrations. Many of these designs are asymmetrical in form and have a unique beauty of their own. The design is developed around a circle using triangular and floral patterns in the stylised manner.

21

The Hridayakamal, associated with Lakshmi, the goddess of wealth, is an auspicious *kolam* design of Tamil Nadu which generally decorates the *puja* area on Fridays. Lakshmi is commonly depicted as seated inside a magnificent lotus flower. The size and designing technique of this floor design varies from seven to nine or eleven dots placed diagonally across to form a circle.

22

Floor decorations in Kerala are deftly designed with flowers, leaves, grass, etc. Also known as *aniyal* or *puvu* (flower) *kolam*, these designs are based on simple geometrical patterns. A brass lamp is generally placed at the centre of the floor design.

23

Muggulu floor designs of Andhra Pradesh are almost identical to the *kolams* of Tamil Nadu, both in design and technique. The skill lies in the imaginative use of the dots which are laid out at regular intervals in descending order.